गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत... 4 नवम्बर से 10 नवम्बर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
4 नवम्बर से
10 नवम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

हिन्दू संस्कृति में दीपावली के दिन देवी लक्ष्मी, गणेश, सरस्वती, कुबेर आदि का पूजन करने का विधान है। क्योकि देवी लक्ष्मी की उत्पत्ती दीपावली के दिन मानी जाती हैं और शास्त्रोक्त वर्ण हैं धन की देवी लक्ष्मी हैं और धन के देवता कुबेर हैं, जिनके प्रसन्न होने से मनुष्य को धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता हैं। मां लक्ष्मी चंचल हैं। अर्थात लक्ष्मी जी वह एक जगह टिकती नहीं है। किस प्रकार लक्ष्मी का आगमन आपके घर में हो और जिदंगी दुःख, दरिद्र, कष्टो से छुट कर खुशियों से भर जाए उससे जुडे रहस्यो को भारतीय ऋषि मुनियों ने खोज निकाला हैं। यह भी एक प्रमुख कारण हैं की दीपावली का पर्व मनाया जाता हैं और लक्ष्मीजी का पूजन अर्चन किया जाता हैं।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं की धन कि देवी लक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। लेकिन बिना बुद्धि के धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य व्यर्थ हैं। इसके पीछे मुख्य कारण हैं की भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के महासागर हैं, एवं तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं। समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले गणेश विनायक हैं। अतः बुद्धि कि प्राप्ति के लिये बुद्धि और विवेक के अधिपति देवता गणेश का पूजन करने का विधान हैं। गणेशजी समस्त सिद्धियों को देने वाले देवता माना गया है। क्योकि समस्त सिद्धियाँ भगवान गणेश में वास करती हैं। इस लिये लक्ष्मीजी के साथ में श्री गणेशजी कि आराधना आवश्यक हैं।

एसी पौराणिक मान्यता हैं कि धन तेरस के दिन धनवंतरी नामक देवता अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए थे। धनवंतरी धन, स्वास्थय व आयु के अधिपति देवता हैं। धनवंतरी को देवों के वैध व चिकित्सक के रुप में जाना जाता हैं।

धन तेरस के दिन चांदी के बर्तन-सिक्के खरीदना विशेष शुभ होता हैं। क्योकि शास्त्रों में धनवंतरी देव को चंद्रमा के समान माना गया हैं। धन तेरस के धनवंतरी के पूजन से मानसिक शान्ति, मन में संतोष एव स्वभाव में सौम्यता का भाव आता हैं। जो लोग अधिक से अधिक धन एकत्र करने कि कामना करते हों उन्हें धनवंतरी देव कि प्रतिदिन आराधना करनी चाहिए।

धनतेरस पर पूजा करने से व्यक्ति में संतोष, स्वास्थय, सुख व धन कि विशेष प्राप्ति होती हैं। जिन व्यक्तियों के उत्तम स्वास्थय में कमी तथा सेहत खराब होने कि आशंकाएं बनी रहती हैं उन्हें विशेष रुप से इस शुभ दिन में पूजा आराधना करनी चाहिए। धनतेरस में खरीदारी शुभ मानी जाती हैं। लक्ष्मी जी एवं गणेश जी कि चांदी कि प्रतिमा-सिक्को को इस दिन खरिदना धन प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति हेतु श्रेष्ठ होता हैं। धनतेरस के दिन भगवान धनवन्तरी समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिये धनतेरस के दिन खास तौर से बर्तनों कि खरीदारी कि जाती हैं। इस दिन स्टील के बर्तन, चांदी के बर्तन खरीदने से प्राप्त होने वाले शुभ फलो में कई गुणा वृद्धि होने कि संभावना बढ़जाती हैं।

मां लक्ष्मी कि कृपा प्राप्त करने हेतु एवं उनका स्थायी निवास हो सके इस उद्देश्य से घर-दुकान-व्यवसायिक कार्यालय में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन हेतु दिन के सबसे शुभ मुहूर्त को लिया जाता हैं।
दीपावली चौघ़डिया मुहूर्त समय को घर व परिवार में लक्ष्मी पूजन करने के लिये शुभ माना जाता हैं। श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या में प्रदोष काल एवं रात्रि समय में स्थिर लग्न समय में करना शुभ होता है लक्ष्मी पूजन, दीप प्रजवल्लित करने के लिये प्रदोषकाल मुहूर्त समय ही

विशेषतया शुभ माना गया हैं।

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसे अधिक से अधिक धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त हो। हर व्यक्ति अपनी धन-संपत्ति को दिन दोगुनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए व्यक्ति लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विभिन्न मंत्र, यंत्र एवं तंत्र के प्रयोगो को अपना कर लक्ष्मी कारक विभिन्न सामग्रीयों को अपने घर, दुकान, ऑफिस आदि व्यवसायीक स्थान पर स्थापित कर उसका पूजन-अर्चन करते हैं।

जिन लोगों ने लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अपने घर में सुख समृद्धि कारक विभिन्न दुर्लभ सामग्रीयां जैसे श्रीयंत्र, दक्षिणावर्ति शंख इत्यादि सामग्री को अपने घर में पहले से स्थापित कर उसका नियमित पूजन-अर्चन कर रहे हो, उन्हें अधिक लाभ की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के अन्य सरल उपायों को भी अपने जीवन में अवश्य आजमाना चाहिए अथवा जिन लोगों ने इन लक्ष्मी कारक दुर्लभ वस्तुओं को अभी तक अपने घर में को स्थापित नहीं किया हैं या वह लोग इस सामग्रीयों को स्थापित करने में असमर्थ हैं, उन लोगों को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु यहां दिये गये अनुभूत उपायो को अपनाकर जीवन में निश्चित रुप से सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए एवं इन उपायों से लाभ की प्राप्ति होने पर विभिन्न दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कर अपने घर में अवश्य स्थापित कर उसना नियमित पूजन-अर्चन करना चाहिए। दीपावली के शुभ मुहूर्त में धन प्राप्ति के विशेष उपायों को प्रारंभ कर निश्चित रुप से अपने जीवन में धन-वैभव, सुख-समृद्धि का आगमन किया जा सकता हैं।

इस अंक में पाठको के मार्गरशन हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपायों को 3 भागों में दिया गया हैं, जो क्रमश: दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय, दैनिक जीवन में अपनाये लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपाय और दरिद्रता निवारण हेतु विशेष उपाय हैं।

दीपावली पर किये जाने वाले उपायों को आवश्यक्ता अनुसार अन्य शुभ मुहूर्त एवं अवसरों पर किया जा सकता हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की इन दीपावली पर्व पर किये जाने वाले धन प्राप्ति के उपायों को दीपावली पर करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां लक्ष्मी की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। मां महालक्ष्मी से यही प्राथना हैं...

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से दीपावली की शुभकामनाएं एवं नूतनवर्षा अभिनंदन

चिंतन जोशी

***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

धनतेरस शुभ मुहूर्त सोमवार 5-नवम्बर-2018

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एसी पौराणिक मान्यता हैं कि धन तेरस के दिन धनवंतरी नामक देवता अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए थे। धनवंतरी धन, स्वास्थय व आयु के अधिपति देवता हैं। धनवंतरी को देवों के वैध व चिकित्सक के रुप में जाना जाता हैं। धन तेरस के दिन चांदी के बर्तन-सिक्के खरीदना विशेष शुभ होता हैं। क्योकि शास्त्रों में धनवंतरी देव को चंद्रमा के समान माना गया हैं। धन तेरस के धनवंतरी के पूजन से मानसिक शान्ति, मन में संतोष एव स्वभाव में सौम्यता का भाव आता हैं। जो लोग अधिक से अधिक धन एकत्र करने कि कामना करते हों उन्हें धनवंतरी देव कि प्रतिदिन आराधना करनी चाहिए। धनतेरस पर पूजा करने से व्यक्ति में संतोष, स्वास्थय, सुख व धन कि विशेष प्राप्ति होती हैं। जिन व्यक्तियों के उत्तम स्वास्थय में कमी तथा सेहत खराब होने कि आशंकाएं बनी रहती हैं उन्हें विशेष रुप से इस शुभ दिन में पूजा आराधना करनी चाहिए। धनतेरस में खरीदारी शुभ मानी जाती हैं। लक्ष्मी जी एवं गणेश जी कि चांदी कि प्रतिमा-सिक्को को इस दिन खरिदना धन प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति हेतु श्रेष्ठ होता हैं। धनतेरस के दिन भगवान धनवन्तरी समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिये धनतेरस के दिन खास तौर से बर्तनों कि खरीदारी कि जाती हैं। इस दिन स्टील के बर्तन, चांदी के बर्तन खरीदने से प्राप्त होने वाले शुभ फलो में कई गुणा वृद्धि होने कि संभावना बढ़जाती हैं।

धनतेरस पूजा मुहूर्त **(18:06 से 20:01)**

प्रदोष काल 2 घण्टे एवं 24 मिनट का होता हैं। अपने शहर के सूर्यास्त समय अवधि से लेकर अगले 2 घण्टे 24 मिनट कि समय अवधि को प्रदोष काल माना जाता हैं। अलग- अलग शहरों में प्रदोष काल के निर्धारण का आधार सूर्योस्त समय के अनुसार निर्धारीत करना चाहिये। धनतेरस के दिन प्रदोषकाल में दीपदान व लक्ष्मी पूजन करना शुभ रहता है ।

इस वर्ष 5 नवम्बर 2018 (धनतेरस) को भारतीय समय अनुसार नई दिल्ली में संध्या सूर्यास्त के बाद सांय 05 बज कर 33 मिनिट से आरम्भ होकर रात के 07 बजकर 57 मिनट तक का समय प्रदोष काल रहेगा। इस समया अवधि में सांय 07:05:21 से लेकर रात 09:00:48 के मध्य स्थिर लग्न (वृषभ) रहेगा, यह संयोग प्रदोष मुहुर्त समय में होने के कारण घर-परिवार में स्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

5 नवम्बर 2018 को प्रदोष काल में भी स्थिर लग्न (वृषभ राशि) रहेगा, लक्ष्मी पूजन हेतु स्थिर लग्न का समय सबसे उतम माना जाता हैं। धन तेरस के दिन प्रदोष काल व स्थिर लग्न दोनों का संयोग संध्या **06:06 बजे से लेकर रात्री 08:01** बजे तक का समय रहेगा जिससे मुहुर्त की शुभता में वृद्धि होती हैं।

इसके अलावा अन्य चौघाडिया मुहूर्त

- अमृत मुहूर्त सुबह 06.00 से 07.30 तक
- शुभ मुहूर्त सुबह 09.00 से 10.30 तक
- लाभ मुहूर्त दिन 03.00 से 04.30 तक
- अमृत मुहूर्त दिन 04.30 से 06.00 तक
- लाभ मुहूर्त रात 10.30 से 12.00 तक
- शुभ मुहूर्त रात 01.30 से 03.00 तक
- अमृत मुहूर्त रात 03.00 से 04.30 तक

शुभ मुहूर्त का समय धन तेरस की पूजा के लिये विशेष शुभ रहेगा। लाभ मुहूर्त पूजन करने से प्राप्त होने वाले लाभों में वृद्धि होती हैं। शुभ काल मुहूर्त कि शुभता से धन, स्वास्थय व आयु में वृद्धि होती हैं। सबसे अधिक शुभ अमृत काल में पूजा करने का होता हैं।

नोट: उपरोक्त वर्णित सूर्यास्त का समय निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुसार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्यास्त ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्यास्त समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्यास्त समय का निरधारण स्थानिय सूर्यास्त के अनुसार हि करना उचित होगा।

दीपावली पूजन मुहूर्त बुधवार 7-नवम्बर-2018

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मां लक्ष्मी कि कृपा प्राप्त करने हेतु एवं उनका स्थायी निवास हो सके इस उद्देश्य से घर-दुकान-व्यवसायिक कार्यालय में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन हेतु दिन के सबसे शुभ मुहूर्त को लिया जाता हैं।
इस वर्ष दीपावली का पर्व गुरुवार, 7 नवम्बर 2018 को कार्तिक मास कि अमावस्या को सूर्योदय कालीन नक्षत्र स्वाति परन्तु प्रदोषकाल में विशाखा नक्षत्र का काल रात 07:36 तक तत्पश्चयात विशाखा नक्षत्र रहेगा, आयुष्मान योग में तथा चन्दमा का भ्रमण तुला राशि में रहेगा। दीपावली के दिन अमावस्या तिथि, प्रदोष काल, शुभ लग्न व चौघा़डिया मुहूर्त विशेष का अत्याधिक महत्व होता हैं।

प्रदोष काल 2 घण्टे एवं 24 मिनट का होता हैं। अपने शहर के सूर्यास्त समय अवधि से लेकर अगले 2 घण्टे 24 मिनट कि समय अवधि को प्रदोष काल माना जाता हैं। अलग- अलग शहरों में प्रदोष काल के निर्धारण का आधार सूर्योस्त समय के अनुसार निर्धारीत करना चाहिये। प्रदोष काल मुहूर्त अपने शहर के सूर्यास्त समय से 2 घन्टे 24 मिनट तक का समय शुभ मुहूर्त समय के लिये प्रयोग किया जाता हैं. इसे प्रदोष काल समय कहा जाता हैं। इस वर्ष 7 नवम्बर 2018 (दीपावली) को भारतीय समय अनुसार नई दिल्ली में सूर्यास्त संध्या 05 बज कर 31 मिनिट पर होगा। संध्या 05 बज कर 31 मिनिट से आरम्भ होकर रात के 07 बजकर 55 मिनट तक का समय प्रदोष काल रहेगा। 7 नवम्बर 2018 को सांय 05:58 से लेकर रात 07:54 के मध्य स्थिर लग्न (वृषभ) रहेगा, यह संयोग प्रदोष मुहुर्त समय में होने के कारण घर-परिवार में स्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। प्रदोष काल व स्थिर लग्न दोनों का संयोग संध्या 05.58:00 बजे से लेकर रात्री 07:54:00 बजे तक का समय रहेगा जिससे मुहुर्त की शुभता में वृद्धि होती हैं। प्रदोष काल के दौरान संध्या 06:00 बजे तक लाभ चौघडिया एवं 07:30 से शुभ चौघडिया होने से मुहुर्त की शुभता में वृद्धि होती हैं।

जिसमें विशेष रूप से श्री गणेशपूजन, श्री महालक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजन, व्यापारिक खातों का पूजन, दीपदान एवं इस समय के अंतर्गत अपने सेवकों को उपहार देना शुभ रहता हैं। इस मुहूर्त समय में अपने परिवार के बडे सदस्यों एवं मित्र वर्ग से आशीर्वाद लेना एवं उन्हें मिठाईयां, वस्त्र व उपहार आदि देना भी शुभ रहता हैं। विद्वानो के मत से इस मुहूर्त में परिवार के बडे सदस्यों एवं मित्र वर्ग से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद शुभ फलप्रद सिद्ध होता हैं। इस मुहूर्त समय में मंदिर इत्यादि धर्मस्थलो पर दान इत्यादि करना भी विशेष लाभ दायह एवं कल्याणकारी होता हैं।

दीपावली चौघडियां मुहूर्त

दीपावली चौघ़डिया मुहूर्त समय को घर व परिवार में लक्ष्मी पूजन करने के लिये शुभ माना जाता हैं। श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या में प्रदोष काल एवं रात्रि समय में स्थिर लग्न समय में करना शुभ होता है लक्ष्मी पूजन, दीप प्रजवल्लित करने के लिये प्रदोषकाल मुहूर्त समय ही विशेषतया शुभ माना गया हैं।

लक्ष्मी पूजा मुहूर्त दीपावाली के दिन

- **लाभ मुहूर्त सुबह** 06.00 **से** 07.30 **तक**
- **अमृत मुहूर्त सुबह** 07.30 **से** 09.00 **तक**
- **शुभ मुहूर्त दिन** 10.30 **से** 12.00 **तक**
- **लाभ मुहूर्त दिन** 04.30 **से** 06.00 **तक**
- **शुभ मुहूर्त रात** 07.30 **से** 09.00 **तक**
- **अमृत मुहूर्त रात** 09.00 **से** 10.30 **तक**
- **लाभ मुहूर्त रात** 03.00 **से** 04.30 **तक**

नोट: उपरोक्त वर्णित सूर्यास्त का समय निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुसार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्यास्त ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्यास्त समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्यास्त समय का निरधारण स्थानिय सूर्यास्त के अनुसार हि करना उचित होगा।

दीपावली का महत्व और लक्ष्मी पूजन विधि

संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्राचिन काल से हि भारतीय संस्कृति में अनेक पर्व-त्यौहार मनाए जाते हैं। इन त्यौहारों में कार्तिक मास कि अमावस्या को दीपावली का विशेष महत्व हैं। क्योकि दीपावली खुशियों का त्यौहार हैं। दीपावली के दिन भगवान गणेश व लक्ष्मी के पूजन का विशेष महत्व हैं। इस दिन गणेश जी कि पूजा से ऋद्धि-सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं एवं लक्ष्मी जी के पूजन से धन, वैभव, सुख, संपत्ति कि प्राप्ति होती हैं।

दीपावली के दिन किये जाने वाले मंत्र-यंत्र-तंत्र का प्रयोग अत्यधिक प्रभावी माना जाता हैं। दीपावली अर्थातः दीपकों कि माला।

दीपावली के दिन प्रत्येक व्यवसाय-नौकरी से जुडे व्यक्ति अपने व्यवायीक स्थान एवं घर पर मां लक्ष्मी का विधिवत पूजन कर धन कि देवी लक्ष्मी से सुख-समृद्धि कि कामना करते हैं।

पूजन सामग्री :

महालक्ष्मी पूजन में केसर, कूमकूम, चावल, पान, सुपारी, फल, फूल, दूध, बताशे, सिंदूर, मेवे, शहद, मिठाइयां, दही, गंगाजल, धूप, अगरबत्तियां, दीपक, रुई, कलावा(मौली), नारियल और तांबे का कलश।

पूजन विधि :

भूमि को गंगाजल इत्यादी से शुद्ध करके नवग्रह यंत्र बनाएं। यंत्र के साथ ही तांबे के कलश में गंगाजल, दूध, दही, शहद, सुपारी, लौंग आदि डालकर कलश को लाल कपड़े से ढककर एक जटा युक्त नारियल मौली से बांधकर रख दें। नवग्रह यंत्र के पास चांदी का सिक्का और लक्ष्मी गणेश कि प्रतिमा स्थापित कर पंचामृत से स्नान कराकर स्वच्छ लाल कपड़े से पोछ कर लक्ष्मी गणेश को चंदन, अक्षत अर्पित करके फल-फूल आदि अर्पित करें और प्रतिमा के दाहिनी ओर शुद्ध घी का एक दीपक एवं बाई और तेल (मिठेतेल) का एक दीपक जलाएं।

पवित्र आसन पर बैठकर स्वस्ति वाचन करें। गणेश जी का स्मरण कर अपने दाहिने हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प, दूर्वा, द्रव्य आदि लेकर गणेश,

महालक्ष्मी, कुबेर आदि देवी-देवताओं के विधिवत पूजन का संकल्प करें।

सर्वप्रथम गणेश और लक्ष्मी का पूजन करें। उसके पश्चयात षोडशमातृका पूजन व नवग्रह पूजन कर अन्य देवी-देवताओं का पूजन करें।

दीपक पूजन :

दीपक जीवन से अज्ञान रुपी अंधकार को दूर कर जीवन में ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक हैं। दीपक को इश्वर का तेजस्वी रूप मान कर इसकी पूजा करनी चाहिए। पूजा करते समय अंतःकरण में पूर्ण श्रद्धा एवं शुद्ध भावना रखनी चाहिए। दीपावली के दिन पारिवारिक परंपराओं के अनुसार तिल के तेल के सात, ग्यारह, इक्कीस अथवा इनसे अधिक दीपक प्रज्वलित करके एक थाली में रखकर कर पूजन करने का विधान हैं।

उपरोक्त पूजन के पश्चयात घर कि महिलाएं अपने हाथ से सोने-चांदी के आभूषण इत्यादि सुहाग कि संपूर्ण सामग्रीयां लेकर मां लक्ष्मी को अर्पित करदें। अगले दिन स्नान इत्यादि के पश्चयात विधि-विधान से पूजन के बाद आभूषण एवं सुहाग कि सामग्री को मां लक्ष्मी का प्रसाद समजकर स्वयं प्रयोग करें। एसा करने से मां लक्ष्मी कि कृपा सदा बनी रहती है।

जीवन में सफलता एवं आर्थिक स्थिति में उन्नति के लिए सिंह लग्न अथवा स्थिर लग्न का चुनाव कर श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें।

दीपावली पूजन के समय गणेश एवं लक्ष्मी के साथ विष्णु जी का पूजन अवश्य करें जिस्से घरमें स्थिर लक्ष्मी का निवास हो सके। लक्ष्मी जी के दाहिनी ओर विष्णु जी और बाईं ओर गणेश जी कि स्थापना करनी चाहिए।

स्थिर लक्ष्मी कि कामना हेतु दक्षिणावर्ती शंख, मोती शंख, गोमती चक्र इत्यादि को शास्त्रों में लक्ष्मी के सहोदर भाई माना गया हैं। इन दुर्लभ वस्तुओं कि स्थापना करने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं।

लक्ष्मी प्रद कुबेर साधना

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में धन कि देवी लक्ष्मी एवं धन के देवता कुबेर माने जाते हैं। इस लिये कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) एवं दीपावली पर मां लक्ष्मी के साथ धनके देवता एवं नव निधिओं के स्वामी कुबेर कि पूजा-अर्चना कि जाती हैं। लक्ष्मी एवं कुबेर कि पूजा से व्यक्ति कि समस्त भौतिक मनोकामनाएं पूर्ण होकर धन-पुत्र इत्यादि कि प्राप्ति होती हैं। क्योकि आज के भौतिकता वादी युग में मानव जीवन का संचालन सुचारु रुप से चल सके इस लिये अर्थ(धन) सबसे महत्व पूर्ण साधन हैं। अर्थ(धन) के बिना मनुष्य जीवन दुःख, दरिद्रता, रोग, अभावों से पीडित होता हैं। अर्थ(धन) से युक्त मनुष्य जीवन में समस्त सुख-सुविधाएं भोगता हैं।

मां महालक्ष्मी के साथ कुबेर का पूजन करने का विशेष महत्व हमारे शास्त्रों मे वर्णित हैं।

कुबेर दशो दिशाओं के दिक्पालों में से एक उत्तर दिशा के अधिपति देवता हैं। कुबेर मनुष्य कि सभी भौतिक कामनाओं को पूर्ण कर धन वैभव प्रदान करने में समर्थ देव हैं। इसलिए कुबेर कि पूजा-अर्चना से उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर मनुष्य सभी प्रकार के वैभव(धन) प्राप्त कर लेता हैं। धन त्रयोदशी एवं दीपावली पर कुबेर कि विशेष पूजा-अर्चना कि जाती हैं जो शीघ्र फल प्रदान करने वाली मानी जाती हैं। जो मनुष्य धन प्राप्ति कि कामना करते हैं, उनके लिये प्राण-प्रतिष्ठित कुबेर यंत्र श्रेष्ठ हैं। व्यापार-धन-वैभव में वृद्धि, सुख शांति कि प्राप्ति हेतु कुबेर यंत्र श्रेष्ठ हैं।

धनतेरस, दीपावली के दिन अपने पूजा स्थान में कुबेर यंत्र स्थापित करें।

अखंडित कुबेर यंत्र स्वर्ण, रजत, ताम्र पत्र निर्मित हो, तो अति उत्तम यदि उपलब्ध न हो, तो भोजपत्र, कागज पर निर्मित कर पूजन सकते हैं।

यंत्र स्थापना विधि:

प्रात:काल स्नानादि से निवृत होकर उत्तर-पूर्व कि और मुख करके स्वच्छ आसन पर बैठें। अपने सामने पूजन सामग्री एवं माला व अखंडित कुबेर यंत्र को एक लकडी कि चोकी (बाजोट) पर रख दें। सर्व

प्रथम आचमन प्राणायाम करके संकल्पपूर्वक गणेशाधि देवताओं का ध्यान करके उनका पूजन करें, फिर किसी ताम्र पात्र में कुबेर यंत्र को रखकर कुबेर का ध्यान करें।

ध्यान मंत्र

मनुजवाहय विमानवरस्थितं गुरूडरत्नानिभं निधिनाकम्। शिव संख युकतादिवि भूषित वरगदे दध गतं भजतान्दलम्।।

ध्यान के पश्चयात नीचे दिये मंत्र में से किसी एक मंत्र का 1,3,5,7,11,21 माला यथाशक्ति माला जप करें।

कुबेर मंत्र-

अष्टाक्षर मंत्र- *ॐ वैश्रवणाय स्वाहा:*

षोडशाक्षर मंत्र- *ॐ श्री ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वितेश्वराय नम:।*

पंच त्रिंशदक्षर मंत्र- *ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्याधिपतये धनधान्यासमृद्धि दोहि द्रापय स्वाहा।*

मंत्र जप समाप्ती के पश्चयात यंत्र को अपने पूजन स्थान में स्थापीत करके प्रतिदिन धूप-दीप इत्यादी से पूजन कर प्रतिदिन संभव होतो कम से कम एक माला जप करें। प्रतिदिन जप करने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति के 151 सरल उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसे अधिक से अधिक धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त हो। हर व्यक्ति अपनी धन-संपत्ति को दिन दोगुनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए व्यक्ति लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विभिन्न मंत्र, यंत्र एवं तंत्र के प्रयोगो को अपना कर लक्ष्मी कारक विभिन्न सामग्रीयों को अपने घर, दुकान, ऑफिस आदि व्यवसायीक स्थान पर स्थापित कर उसका पूजन-अर्चन करते हैं। जिन लोगों ने लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अपने घर में सुख समृद्धि कारक विभिन्न दुर्लभ सामग्रीयां जैसे श्रीयंत्र, दक्षिणावर्ति शंख इत्यादि सामग्री को अपने घर में पहले से स्थापित कर उसका नियमित पूजन-अर्चन कर रहे हो, उन्हें अधिक लाभ की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के अन्य सरल उपायों को भी अपने जीवन में अवश्य आजमाना चाहिए अथवा जिन लोगों ने इन लक्ष्मी कारक दुर्लभ वस्तुओं को अभी तक अपने घर में को स्थापित नहीं किया हैं या वह लोग इस सामग्रीयों को स्थापित करने में असमर्थ हैं, उन लोगों को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु यहां दिये गये अनुभूत उपायो को अपनाकर जीवन में निश्चित रुप से सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए एवं इन उपायों से लाभ की प्राप्ति होने पर विभिन्न दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कर अपने घर में अवश्य स्थापित कर उसना नियमित पूजन-अर्चन करना चाहिए।

दीपावली के शुभ मुहूर्त में धन प्राप्ति के विशेष उपायों को प्रारंभ कर निश्चित रुप से अपने जीवन में धन-वैभव, सुख-समृद्धि का आगमन किया जा सकता हैं।

पाठको के मार्गरशन हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपायों को 3 भागों में दिया गया हैं, जो क्रमश: दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय, दैनिक जीवन में अपनाये लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपाय और दरिद्रता निवारण हेतु विशेष उपाय हैं।

दीपावली पर किये जाने वाले उपायों को आवश्यक्ता अनुसार अन्य शुभ मुहूर्त एवं अवसरों पर किया जा सकता हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की इन दीपावली पर्व पर किये जाने वाले धन प्राप्ति के उपायों को दीपावली पर करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय

दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय में दिये गयें सभी उपायों विशेष रुप से अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली आदि विशेष मुहूर्त करना चाहिए।

1. दीपावली पूजन के बाद शंख ध्वनि से दरिद्रता दूर होकर लक्ष्मी का निवास होता हैं।
2. दीपावली पूजन में अभिमंत्रित हकीक का पूजन कर उसे धारण करने से धारण कर्ता की आर्थिक स्थिती में सुधार होने लगता हैं।
3. दीपावली पूजन में अभिमंत्रित हकीक का पूजन कर उसे उसे अपने गल्ले (कैश बॉक्स), तिजोरी मनी पर्स में रखने से धन संचय होने लगता हैं एवं धन की वृद्धि होती हैं।
4. धन-संपत्ति की प्राप्ति हेतु अपने व्यवसायीक स्थान या घर की पूजा स्थान में गणेश लक्ष्मी यंत्र अवश्य स्थापित करें।
5. धनतेरस के दिन पीसे चावल का घोल व हल्दी, केसर को मिलाकर उसके घोल से घर में मुख्य द्वार पर ॐ लिखने से नियमित धन का आगमन होता हैं। इस प्रयोग को पुनः अगले वर्ष धनतेरस के दिन इस प्रयोग को पुनः दोहराये।
6. अपार धन-संपत्ति की कामना रखने वाले व्यक्ति को श्रीयंत्र, गणेश लक्ष्मी यंत्र, कनकधारा यंत्र और कुबेर यंत्र का पूजन अवश्य करना चाहिए। विद्वानों का अनुभव हैं की इन यंत्र को पूजन करने वाला मनुष्य को कभी धन का अभाव नहीं होता।
7. दीपावली पूजन में मां लक्ष्मी को पूजा में 11 अभिमंत्रित पीली कौड़ियां अर्पण करें, दूसरे दिन कौड़ियों को लाल कपड़े में बांधकर अपने गल्ले या तिजोरी में रखने से धन की वृद्धि होने लगती है।
8. दीपावली के दिन प्रातः किसी भी लक्ष्मी मंदिर या लक्ष्मी नारायण मंदिर में मां लक्ष्मी को लाल रंग की चुनरी या वस्त्र चढ़ाने से आर्थिक स्थिती प्रबल हो जाती हैं एवं धन की कमी नहीं रहती।
9. दीपावली के दिन पूजन में लक्ष्मी मंत्र का जप कमल गट्टे से करे एवं मां लक्ष्मी को कमल का फूल चढ़ाने से मांलक्ष्मी की विशेष कृपा होती हैं।
10. दीपावली के दिन मां लक्ष्मी को सफेद मिष्ठान का भोग लगाकर उसे गरीबों को बांटने से पुराने कर्ज से जल्द राहत मिलती हैं।
11. दीपावली के दिन इमली के पेड़ की टहनी का टुकड़ा अपने गल्ले या तिजोरी में रखने से धन संचय होता है।
12. दीपावली के दिन सायंकाल सूर्यास्त से कुछ पल पूर्व बरगद की जटा में एक गांठ बांध देने से आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनते हैं, धन प्राप्ति के बाद उस बांधि हुई गांठ को खोल देना चाहिए।
13. दीपावली के दिन दोपहर के समय पीपल की जड़ में दूध, घी और मिश्री (चीनी) मिलाकर ड़ालने से विशेष रुप से धन लाभ का योग बनता हैं।
14. दीपावली के अगले दिन मिट्टी के दीपक में मीठे तेल का दीया मुख्य द्वार पर रखने से घर में निरंतर सुख समृद्धि बढ़ती रहेगी।
15. दीपावली के दिन संध्या समय में पीपल के पेड़ के नीचे सात दीपक प्रज्वलित करके पीपल के वृक्ष की सात बार परिक्रमा करने से आर्थिक संकटों का निवारण हो जाता हैं।
16. दीपावली के दिन मिट्टी के बर्तन में शहद भर कर उसे उपर से ढंक कर किसी सुनसान विरान स्थान में गाढ़ दें। इस प्रयोग से सभी प्रकार के आर्थिक संकटों का निवारण हो जाता हैं।

17. दीपावली के दिन प्रातःकाल मां महालक्ष्मी को तुलसी के पत्तो से बनी माला अर्पित करने से धन की वृद्धि होती हैं।
18. दीपावली के दिन काली हल्दी को 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चै।' मंत्र का 108 बार जाप करके काली हल्दी को परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर से घुमाकर घर से बाहर दक्षिण दिशा में फेंक दें, इस प्रयोग से धन की वृद्धि होती हैं एवं शत्रु द्वारा उत्पन्न पीड़ाएं भी शांत हो जाती हैं।
19. दीपावली की संध्या को पीपल के पेड़ के नीचे एक साबूत सुपारी व एक ताबें का सिक्का रख कर उसे पर हल्दी एवं कुमकुम लगा कर रख दें। रविवार को उसी पेड़ के पीपल का एक अखंडित पत्ता लाकर अपने कार्य स्थल पर गद्दी के नीचे या गद्दी के पास रख ने से निरंतर व्यापार में वृद्धि होती हैं।
20. पौराणिक कथाओं के अनुसार मां महालक्ष्मी समुद्र की पुत्री हैं, समुद्र से उत्पन्न दक्षिणावर्ती शंख, मोती शंख एवं गोमती चक्र इत्यादि समुद्र से प्राप्त होने वाली सामग्रीयां लक्ष्मी के सहोदर हैं, अतः लक्ष्मी पूजन के समय इन सामग्रीयों को घर में स्थापित करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।
21. धन हानी से बचाव के लिए अपने गल्ले में या तिजोरी में लक्ष्मी मंत्र का 108 बार जप करके हुवे काली गुंजा के 7 या 11 दाने डाल दें। इस प्रयोग से व्यवसायीक हानी दूर हो जायेगी और लाभ की स्थिती बनने लगेगी।
22. धन हानी से बचाव के लिए दीपावली की रात को एक मुठ्ठी काले तिल परिवार के सदस्यों के सिर पर से 7 बार उतार कर घर से पश्चिम दिशा में फोंक ने से आर्थिक हानी से रक्षा होती और धन लाभ प्राप्त होता हैं।

दैनिक जीवन में अपनाये लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपाय

दैनिक जीवन में अपनाये लक्ष्मी प्राप्ति में दिये गयें सभी उपाय विशेष प्रभावशाली एवं अनुभूत हैं इन उपायों को साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने दैनिक जीवन में अपना कर निश्चित रुप से धन वैभव एवं ऐश्वर्य प्राप्त कर सकते हैं, इस में जरा भी संदेह नहीं हैं।

1. प्रातः उठते ही हस्तदर्शन (प्रातः कर दर्शनम्) कर दोनों हथेलियों को 2-3 बार मुंह पर फेरना चाहिये।
2. जब भी किसी कार्य से बाहर निकले तो घर पर आते समय कुछ ना कुछ साथ लेकर ही आए खाली हाथ नहीं आए चाहे पेड का पत्ता-अखबार या जीवन जरुरत कि वस्तुएं लेकर आयें। (सूर्यास्त के बाद में पेड के पत्ते तोडना हानी कारक होता हैं।)
3. धन या व्यापार से संबंधीत लेन-देन के खाते पर या पत्र व्यवहार करते समय हल्दी या केशर लगायें।
4. गल्ले में, पैसे के लेन-देन से संबंधित, चैक बुक-पासबुक, पूंजी निवेश से संबंधित कागजात इत्यादि श्री यंत्र के साथ में रखें।
5. प्रतिदिन भोजन के लिए बनी पहली रोटी गाय को खिलाये।
6. शुक्रवार को सफेद वस्तुओं का दान करने से धन योग बनता हैं।
7. प्रात : काल नाशता करने से पूर्व झाड़ू अवश्य लगाये।
8. रात को झूठे बर्तन, कचरा इत्यादि रसोई में नहीं रखे।
9. प्रतिदिन संध्या समय घर पर पूजा नियत समय पर करे।
10. नियमित रुप से शनिवार के दिन घर कि साफ़-सफाई करें।
11. रुपया पैसा धन को थूक लगाकर गिनने से दरिद्रता आती हैं।

12. बुधवार को धन का संचय करें। बैंक में धन जमा करवाते समय लक्ष्मी मंत्र जपा करे।
13. घर में किसी भी देवी देवता कि एक से ज्यादा तस्वीर, मूर्ति पूजा पर स्थान नहीं रखे।
14. जरुरत मंद व्यक्ति, गरिबो को यथासक्ति मदद कर उन्हें दान इत्यादि समय-समय पर देते रहें।
15. पुरानी, रद्दी भंगार इत्यादि शनिवार के दिन घर से बाहर निकाल देनी चाहिये **और जो पैसा मिले उससे घर के लिए स्टिल के बरतन खरिदना अधिक लाभप्रद होता हैं। यदि बर्तन का मूल्य अधिक हो तो उस में अलग से पैसे जोड कर खरीदे जा सकते हैं**
16. शनिवार के दिन काले रंग कि वस्तु, स्टील, लोहा इत्यादि उपहार में नहीं लेनी चाहिये।
17. किसी कर्य के लिये जाते समय खाली पेट कभी भी घर से ना निकले। कार्य में बाधा विघ्न आते हैं, असफलता प्राप्त होती हैं।
18. मंगलवार, गुरुवार, शनिवार को बाल-नाखून नहीं काटने चाहिये।
19. स्थिर लक्ष्मी कि कामना हेतु रुपया-पैसा-हीरे जवाहरात पीला कपडा बिछाकर या पीले कपडे में लपेटकर रखें।
20. वर्ष में कम से कम एक बार परिवार के साथ तीर्थ यात्रा अवश्य करें। परिवार के साथ किसी देवी मैंदिर महिने में कम से कम एक बार में अवश्य जाये।
21. सूर्योदय के समय यदि घर की छत पर काले तिल बिखेरने से घर में सुख समृद्धि होती हैं।
22. अशोक का पेड़ लगाकर उसको सींचने से धन में वृद्धि होती हैं।
23. सुबह मुख्य दरवाजे के बाहर से झाडू से सफाई करके थोडा पानी छिड़क ने से घर में धन कि वृद्धि होती हैं।
24. प्रति सोमवार, बुधवार, शुक्रवार अशोक वृक्ष के अखंडित पत्ते घरमें लाकर शुद्ध जल या गंगाजल से धोकर लाल कपडेसे पोछकर घर में या व्यवसायीक स्थान पर रखने से धनलाभ होता हैं।
25. प्रति सोमवार के दिन अशोक वृक्ष के अखंडित पत्ते लाकर शुद्ध जल या गंगाजल से धोकर लाल कपडे से पोछकर दुकान में या व्यवसायीक स्थल पर माल सामान रखने कि जगह पर रखने से व्यापर में वृद्धि होती हैं।
26. प्रति बुधवार के दिन अशोक वृक्ष के अखंडित पत्ते लाकर शुद्ध जल या गंगाजल से धोकर लाल कपडेसे पोछकर अलमारी, गल्ले में या धन रखने के बक्से में रखने से धन बृद्धि होती हैं।
27. अशोक के मूल की जड़ का एक टुकड़ा पूजा घर में रखने और रोजाना धूप-दीप से पूजन करने से धन कि कमी नहीं होती।
28. तिजोरी के लॉकर में हमेशा दो बॉक्स रखें। एक में रोजाना कुछ रूपये रख कर बंद कर दें, उसमें से रूपये नहीं निकालें या अत्याधिक आवश्यकता होने पर निकाले। दूसरे बॉक्स में से काम के लेन-देन के लिए रूपए निकालें।
29. प्रतिदिन आमदनी का कलेक्शन दूसरे दिन स्वयं के खर्चे के लिये या किसी व्यापारी को चुकाने हेतु निकाले। आमदनी या कलेक्शन को कम से कम 24 घंटे के बाद ही खर्च के लिये निकालने से अत्याधिक धन लाभ होता हैं।
30. जो लोग नौकरी करते हैं वह भी अपना पैसा बैंक में जमा होने के या घर में लाने के 24 घंटे के बाद ही खर्च के लिये निकाले तो उन्हें अत्याधिक धन लाभ होता हैं।

दरिद्रता निवारण हेतु विशेष उपाय

दरिद्रता निवारण को भी दो भाग में बांटा गया हैं एक में दरिद्रता आने के कारण और दूसरे भाग में दरिद्रता मुक्त के सरल उपाय दिये गये हैं।

क्यों आती हैं दरिद्रता ?

1. प्रतिदिन देर उठने से दरिद्रता आती हैं।
2. घर का सारा कचरा झाडू लगाकर एक कोने में समेट कर रखने से आती हैं। कचरे को घर से बाहर फेक दें।

3. संध्या समय घरमें दीपक नहीं जलाने से दरिद्रता आती हैं।
4. गुरुवार के दिन बाल-दाढीं(हजामत) काटने से निर्धनता आती हैं।
5. दीप से अगरबत्ती जलाने से दरिद्रता आती हैं। (अगरबत्ती अलग माचिस से जलाये)
6. गुरुवार के दिन भोजन में मांसाहार खाने से दरिद्रता आती हैं।
7. गुरुवार के दिन धोबी को कपड़े धोने के लिये देने से दरिद्रता आती हैं।
8. गुरुवार के दिन पीली मिट्टी से बाल धोने से निर्धनता आती हैं।
9. सूर्यास्त होने के बाद घर में झाड़ू लगाने से घर में दरिद्रता आती हैं।
10. अर्द्धवृत्ताकर (अर्ध गोलाकार) भूखंड या भवन के स्वामित्व से दरिद्रता प्राप्त होती हैं।
11. गुरु का दिया गये मंत्र के त्याग करने से व्यक्ति दरिद्र हो जाता हैं।
12. गुरु से कपट व मित्र से चोरी करने से दरिद्रता आती हैं।
13. कपड़े के आसन पर बैठ कर पूजा-पाठ मंत्र जप अनुष्ठान इत्यादि करने से दरिद्रता आती हैं।
14. पत्थर एवं मिट्टी के बर्तनों में भोजन करने से निर्धनता आती हैं।
15. भोजन और दूध को बिना ढके रखने से निर्धनता आती हैं।
16. घर में सुबह झाड़ू-बुहारी करके साफ नहीं करने से निर्धनता आती हैं।
17. इन्द्रियों को संयम में नहीं रख कर परस्त्री एवं परधन कि कामना करने से निर्धनता आती हैं।
18. इश्वर में श्रद्धा नहीं रखने से व्यक्ति दरिद्र हो जाता हैं।
19. दिनमें अकारण सोने से घर में दरिद्रता आती हैं।
20. रोग से पीडित व्यक्तियों को सांत्वना देने के बजाय उपहास करने से निर्धनता आती हैं।
21. जरा-जरा बात में खिन्न होने वाले जरा-जरा बात में अपने वचनों से मुकर ने वाले व्यक्ति दरिद्र हो जाता हैं।
22. छल-कपट और स्वार्थ का आश्रय लेकर, दूसरों के शोषण का आश्रय लेकर धन प्राप्त करने से निर्धनता आती हैं। उसके पास धन आ सकता है परन्तु उसके पास धन महालक्ष्मी नहीं आ सकती।
23. जूठे मुँह रहने से दरिद्रता आती हैं।
24. मैले-कुचैले-फेटेहुए कपड़े पहनने से निर्धनता आती हैं।
25. दीन-दुःखियों को सताने से निर्धनता आती हैं।
26. माता-पिता के आशिर्वाद नहीं लेने से निर्धनता आती हैं।

27. धर्म, शास्त्र और संतों कि निंदा करने से व्यक्ति दरिद्र हो जाता हैं।
28. घी को जूठे हाथ से छूने से निर्धनता आती हैं।
29. जूठा हाथ सिर पर लगाने से निर्धनता आती हैं।
30. जूठे मुँह शुभ वस्तुओं का स्पर्श करने से दरिद्रता आती हैं।
31. मंगलवार को ऋण लेने से दरिद्रता आती हैं।
32. पापकर्म में रत रहने से निर्धनता आती हैं।
33. कठोर-कडक वचनो का प्रयोग करने से निर्धनता आती हैं।
34. बडे-बुजुर्गो का अनादर करने से उनकी बात नहीं मानने से निर्धनता आती हैं।
35. जो स्त्री-पुरुष अपने पति-पत्नी को दबाकर रखने कि इच्छा रखने से निर्धनता आती हैं।
36. वासी फूल का उपयोग करने से निर्धनता आती हैं।
37. दुर्गंध युक्त स्थान पर अधिक लोगो के साथ में सोने से निर्धनता आती हैं।
38. फटा-टूटा आसन का उपयोग करने से निर्धनता आती हैं।
39. स्मशान कि चिता के अंगारे, अस्थि, भस्म, गाय, कपास(रुई), पूज्य एवं गुरु जन, ब्राह्मण को पैर लगाने से निर्धनता आती हैं।
40. अपने एक पैर को दूसरे पैरसे घीसने से दबाने से निर्धनता आती हैं।
41. जिस जल में नाखून या बाल गिरे हों उस जल का सेवन या स्पर्श करने से निर्धनता आती हैं।
42. चतुर्दशी एवं अमावस्या के दिन शारीरिक सुख भोगने से निर्धनता आती हैं।
43. बिना वस्त्र के सोने से निर्धनता आती हैं।
44. कचरा निकालते वक्त उडने वाली धुक का स्पर्श शरीर को होने से दरिद्रता आती हैं। (झाड़ू लगाते वक्त सावधानी बरते जेसे धूल का स्पर्श आपके शरीर को नहों)
45. बैठे-बैठे खुरशी-टेबल-पलंग इत्यादि पर बिना वजह से बजाने (ढोल जेसे) से निर्धनता आती हैं।
46. अपने शरीर पर बिना वजह से बजाने (ढोल जेसे) से निर्धनता आती हैं।
47. स्नान करने से उपरांत शरीर पर तेल लगाने से निर्धनता आती हैं। (स्नान से पूर्व तेल लगाले)
48. अपने पैर कि एडी का मस्तक पर स्पर्श करने से निर्धनता आती हैं।
49. अंधेरे कमरे में सोने से निर्धनता आती हैं। (कमरे में थोडी से रोशनी जरुर रखे)
50. रात्री काल मे धारण करने वाले वस्त्र दिन में धारण करने से निर्धनता आती हैं।(रात में एवं दिन में धारण करने वाले कपडे अलग-अलग रखें। दिन के रात में एवं रात के दिन में कभी नहीं पहने)
51. वासी एवं शुष्क भोजन खाने से दरिद्रता आती हैं।
52. शुक्रवार एवं अमावस्या के दिन तेल-गंध-द्रव्य को शरीर पर लागने से दरिद्रता आती हैं।
53. अपने बाएं हाथ से माता का स्पश करने से दरिद्रता आती हैं। (यदि स्पर्श करे तो दोनो हाथो से करें केवल बाएं हाथ से स्पर्श न करें।)
54. अपवित्र अवस्था में सूर्य-चंद्र-तारों का दर्शन करने से निर्धनता आती हैं।
55. सूर्यास्त का दर्शन करने से निर्धनता आती हैं।
56. परस्त्री-परपुरुष को नग्न अवस्था में देखने से निर्धनता आती हैं।
57. पर धन,स्त्री, संपत्ति कि इच्छा करने से दरिद्रता आती हैं।
58. नाखून, काटे, खून, मिट्टी, कोयला या पानी से भूमि पर अनावश्यक लेखन-चित्रण करने से दरिद्रता आती हैं।
59. स्वयं माला गूंथ(माला बना) कर स्वयं धारण करने से दरिद्रता आती हैं।
60. स्वयं चंदन घीस कर स्वयं लगाने से दरिद्रता आती हैं। (किसी और से घीसवाकर लगाये)
61. ब्राह्मण कि निन्दा करने से दरिद्रता आती हैं।

62. बेठे-बेठे या सोते हुए दोनो पैरो को बिना वजह हिलाने-नचाने से दरिद्रता आती हैं।
63. भोजन के बाद तुरंत दातुन करने से दरिद्रता आती हैं।
64. अन्य का झुठा अन्न खाने से दरिद्रता आती हैं।
65. अपने इष्ट का त्याग कर अन्य के इष्ट में आस्था रखने से दरिद्रता आती हैं।
66. पर स्त्री-पुरुष कि सेवा कर के अपने परिवार के लोगो को कष्ट देने से दरिद्रता आती हैं।
67. परिश्रम-पुरुषार्थ से खिन्न होने वाले व्यक्ति कि सहायता करने से दरिद्रता आती हैं।
68. अयोग्य मनुष्य को दान देन या सहायता करने से दरिद्रता आती हैं।
69. प्रतिपदा को गृहारम्भ करने से दरिद्रता आती हैं।
70. घर का द्वार आध्मात (फूला हुआ) होनेपर दरिद्रता आती हैं।
71. मुख्य द्वारके ऊपर द्वार और द्वारके सामने (आमने-सामने) द्वार होने से दरिद्रता आती हैं।
72. भवन में ईशान, आग्नेय व पश्चिममें ऊँची और नैऋत्य नीची भूमि होने से दरिद्रता आती हैं।
73. मुख्य द्वारके सामने दीवार या बावड़ी होनेसे दरिद्रता होती है ।
74. नल से पानी टपकते रहने से दरिद्रता आती हैं, पानी का अपव्यय होने से वरुण देव का श्राप लगता हैं।
75. संध्या समय भोजन और पढ़ने से धन नाश होता हैं।
76. देवी-देवताओं पर चढ़ाये गये फूल या हार के सूखने पर भी घर में रकखने से दरिद्रता आती हैं। (फूल-हार हो किसी प्लास्टीक बैग में भरकर रख दें फिर उसे एक-दो माह में बार इकट्ठे बहते जल में विसर्जित करदें।)
77. टूटा-फूटा फर्नीचर, बर्तन, कांच, फटे हुए कपड़े रखने से दरिद्रता आती हैं।
78. घर कि दिवारो पर, फर्श पर पेन, पैंसिल,चाक इत्यादि से लिखना-चित्रकारी करने से दरिद्रता आती हैं।

दरिद्रता निवारण के सरल उपाय

1. प्रतिदिन प्रातः जल्दी उठ कर इष्ट आराधना करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
2. गुरुवार के दिन घर में गाय के गोबर का लेपन आदि करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
3. गुरुवार के दिन पीली वस्तु का भोजन करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
4. दान-पुण्य इत्यादि कर्म करते रहने से दरिद्रता दूर होती हैं।
5. प्राण-प्रतिष्ठित सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्रता से मुक्ति मिलती हैं।
6. घर में प्राण-प्रतिष्ठित प्राण-प्रतिष्ठित **दक्षिणावर्ती शंख कि घरमें स्थापना से** लक्ष्मी का स्थायी वास होता हैं, शत्रुओं से रक्षा होती है, रोग, ऋण, अज्ञानता एवं दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं।
7. घर में प्राण-प्रतिष्ठित **विष्णु शंख (**श्वेत रंग का शंख) स्थापित करने से एवं नित्य पूजन करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
8. श्री सूक्त का पठन करने से भी दरिद्रता से मुक्ति मिलती हैं।
9. श्री सूक्त कि ऋचाओं का श्रवण या पठन करके नियमित हवन करने से विभिन्न कष्ट दूर होकर ऐश्वर्य प्राप्ति होती हैं। लक्ष्मी जी कि कृपा प्राप्त होने से दुःख, दरिद्रता, रोग, कष्ट, कर्ज से स्वतः मुक्ति मिलती हैं।
10. मान्यता हैं कि दीपावली के दिन जल में तथा तेल में लक्ष्मी का वास होता हैं। इस लिये दीपावली के दिन शरीर पर तेल कि मालिश करके जल (गंगा स्नान या जल में गंगाजल जल मिलाकर) से स्नान करने से दरिद्रता से मुक्ति मिलती हैं।
11. कनकधारा स्तोत्र के पाठ के पठन एवं श्रवण से दरिद्रता से मुक्ति मिलती हैं।
12. कनकधारा यंत्र को दरिद्रता का नाश करने हेतु रामबाण माना जाता हैं इस लिये कनकधारा यंत्र

कि आराधना करने से दरिद्रता से मुक्ति मिलती हैं।

13. दुर्गा बीशा यंत्र के पूजन से भी दरिद्रता का नाश होता हैं।
14. माह कि दोनों संकट चतुर्थी के नियमित व्रत से दरिद्रता का नाश होता हैं।
15. लक्ष्मी गणेश यंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होता हैं।
16. श्रीयंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होकर भौतिक सुख, शांति व सौभाग्य की प्राप्ति होती हैं।
17. पारद श्री यंत्र या शिवलिंग का पूजन दरिद्रता से मुक्ति दिलाता हैं।
18. लक्ष्मी यंत्र या अष्ट लक्ष्मी यंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होता है।
19. रामायण कि निम्न चौपाइ का पाठ करने से दरिद्रता का नाश होता हैं।

चौपाइ

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारिके ॥

20. बृहस्पति ग्रह का रत्न सुनेला धारण करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
21. श्री यंत्र जड़ित नवरत्न धारण करने से से दरिद्रता का नाश होता हैं।
22. दरिद्रता निवारण हेतु आत्मा में अचल श्रद्धा हो, तो दरिद्र मनुष्य भी धनवान हो जाते हैं।
23. कल्पवृक्ष यंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होता हैं।
24. प्रदोष व्रत करने से शनि से पीडित समस्याए कम होती हैं एवं दरिद्रता का नाश होता हैं।
25. आंगन में तुलसी का पौधा लगा कर उसका पूजन से दरिद्रता दूर होती हैं।
26. पीपल वृक्ष की नित्य तीन बार परिक्रमा करने और जल चढाने पर दरिद्रता का नाश होता हैं।
27. मिष्ठान अकेले नहीं खाकर परिवार एवं मित्र वर्ग में बांट कर खाने से दरिद्रता का नाश होता हैं।
28. पीपल के बने शिवलिंग का पूजन करने से दरिद्रता का निवारण होता हैं।
29. शिव पंचाक्षरी मंत्र (ॐ नमः शिवाय) का जप करने वाले को दरिद्रता नही आती हैं।
30. घर के मुख्य द्वार के उपर अंदर कि ओर गणेश प्रतिमा या चित्र लगाने से घर से दरिद्रता दूर होकर पूनः प्रवश नहीं करती। (घर के बाहर लगाने से दरिद्रता आति हैं। यदि बहार लगाना हो तो इस प्रकार लगाये जेसे अंदर बाहार दोनो ओर गणेश जी कि दोनो पीठ एक हि स्थान पर मिलती हों।)
31. बुधवार के दिन सफेद कपड़े का झंडा बना के पीपल के वृक्ष पर लगाने से निर्धनता दूर होती हैं।
32. लक्ष्मी जी के समक्ष घी का दीपक लगाने से निर्धनता दूर होती हैं।
33. प्रति शुक्रवार के दिन अशोक वृक्ष के 13 अखंडित पत्ते लाकर शुद्ध जल या गंगाजल से धोकर लाल कपडेसे पोछकर इन 13 पत्तो का मौली (कलावा) से तोरण बनाकर घर के मुख्य द्वार पर लगाने से दरिद्रता एवं शत्रु से मुक्ति मिलती हैं।

नोटः जैसे आत्मबल में श्रद्धा उत्पन्न होते हि कायर व्यक्ति भी शूरवीर हो जाते हैं, प्रमादी एवं आलसी व्यक्ति भी उद्यमी हो जाते हैं, मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान हो जाते हैं, रोगी व्यक्ति भी निरोग हो जाते हैं, उसी प्रकार से उचित कर्म करने से दरिद्र व्यक्ति भी धनवान हो जाते हैं।

मंत्र सिद्ध काली हल्दी के विभिन्न लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विद्वानों का कथन हैं की ईश्वर की कृपा प्राप्ति हेतु एवं वांछित कार्य में सिद्धि की प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ति हेतु मंत्र, यंत्र और तंत्र के अनेक उपायो का वर्णन हिन्दूं धर्मग्रंथों में मिलता हैं।

आज के भौतिक युग में हर कार्य अर्थ (धन) के उपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुपसे निर्भर होता हैं इस लिये प्रत्येक व्यक्ति कि यही इच्छा होती हैं कि उसके पास भी इतना धन हो कि वह अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखो को भोग ने में समर्थ हों। हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसकी धन-संपत्ति दिन दोगुनी रात चौगुनी बढती रहें !

हिन्दू धर्म में धन और ऐश्वर्य की देवी मां महालक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। इस लिए माँ महालक्ष्मी की प्रसन्नता एवं कृपा से धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के सरल उपाय तंत्र शास्त्र में बताये गये हैं।

भारतीय परंपरा में हल्दी का विशेष महत्व बताया गया हैं, हल्दी का उपयोग प्रायः सभी व्यक्ति के जीवन में भोजन के अलावा अधिक्तर आध्यात्मिक व औषधि के रुप में भी होता हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में हल्दी के प्रयोगो से धन प्राप्ति संभव हैं!

हिन्दू संस्कृति में हल्दी को अत्यंत शुभ एवं गुणकारी माना जाता हैं इस लिए हल्दी का प्रयोग भोजन व औषधि के अलावा मांगलित कार्य, देवी-देवताओं के पूजन-अर्चन इत्यादि में विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। अधिकतर लोगों ने हल्दी केवल पीले रंग की ही देखी होगी। क्योकि पीली हल्दी का प्रयोग हर घरों में मसालों के रुप में प्रयोग होता ही हैं, इस लिए पीली हल्दी बाजारों में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

लेकिन हल्दी काले रंग की भी प्राप्त होती हैं। काली हल्दी को तंत्र शास्त्रों में अधिक दुर्लभ और देवीय गुणों से युक्त माना गया हैं। काली हल्दी औषधिय गुणों से भरपूर होती हैं, इसलिए इस का प्रयोग तंत्र प्रयोगो के अलावा औषधि के निर्माण इत्यादि में भी विशेष रुप से किया जाता हैं।

तंत्र विद्या के जानकार मानते हैं की धन प्राप्ति हेतु काली हल्दी एक अद्भुत चमत्कारी प्रभावों से युक्त होती हैं, उनका मानना हैं की काली हल्दी के विधि-विधान से पूजन से व्यक्ति असीम धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने में समर्थ हो सकता हैं।

हल्दी को हरिद्रा भी कहा जाता है। तंत्र विद्या के जानकारों का तो यहां तक मानना हैं की असली काली हल्दी प्राप्त होना सौभाग्य की बात हैं। जिस घर में काली हल्दी का पूजन होता हो वह घर में निवास कर्ता सौभाग्यशाली होते हैं।

ऐसी धार्मिक मान्यता हैं की अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली, ग्रहण, गुरु पुष्यामृत योग, त्रिपुष्कर योग, द्विपुष्कर योग, कार्य सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग आदि किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर उसका नियमित पूजन करने से काली हल्दी का चमत्कारी प्रभाव आश्चर्यजन रुप से अति शीघ्र प्राप्त होता हैं।

धन प्राप्ति प्रयोग

- काली हल्दी को अपने पूजन स्थान में लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा या चित्र के पास स्थापित कर उसका विधिवत पूजन करें।
- विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी को घर में स्थापित कर पूजन करने से घर में निरंतर सुख-शांति की वृद्धि होने लगती है।
- तंत्र शास्त्र के जानकारों का कथन हैं की काली हल्दी के नियमित पूजन से व्यक्ति को कभी पैसा की कमी नहीं होती।
- काली हल्दी की गांठ को चांदी, स्टील या प्लास्टिक की डिब्बी में रख कर प्रति-दिन देवी-देवता के साथ धूप-दीप से पूजन करें।
- काली हल्दी की गांठ को सोने या चांदी के सिक्के के साथ लाल वस्त्र में बांधकर पोटली बना कर उसे अन्य देव प्रतिमाओं के साथ पूजा करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती है। (सोने या चांदी के सिक्के न हो तो रुपये-पैसे के नये सिक्के के साथ रखा जा सकता हैं)
- काली हल्दी की पोटली को को अपने गल्ले (कैश बॉक्स), तिजोरी आदि में भी रख सकते हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी के पूजन से धन से संबंधित समस्याएं दूर होती है, रोजगार में वृद्धि होती हैं।
- काली हल्दी के प्रभाव से नकारात्मक उर्जा को दूर किया जा सकता है।
- किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को सिंदूर में रखकर धूप-दीप से पूजन कर लाल कपड़े में एक सिक्के के साथ बांधर तिजोरी या गल्ले में रखने से धन की वृद्धि होने लगती है।

प्रबल धन प्राप्ति प्रयोग

प्रबल धन की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को मंत्र सिद्ध 11 गोमती चक्र, 11 पीली कौडियां और काली हल्दी के 11 टुकड़ों को दीपावली या धनत्रयोदशी आदि शुभ अवसर पर पूजन के समय मां लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के साथ स्थापित कर विधिवत पूजन करने से शीघ्र विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं। पूजन के पश्चयात गोमती चक्र, कौडि और हल्दी के टुकड़ों को पीले कपड़े में बांध कर पोटली बना कर अपनी तिजोरी या गल्ले में रखलें। नियमित यथा संभव लक्ष्मी मंत्र का जप करते रहें। इस विधि से पूजन करने से धन संबंधित रुकावट शीघ्र दूर होने लगती हैं और परिवार में निरंतर धन, सुख, समृद्धि में वृद्धि होती हैं।

यदि व्यवसाय में निरन्तर लाभ के स्थान पर घाटा हो रहा हो तो भी यह प्रयोग अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

कार्य सिद्धि प्रयोग

- काली हल्दी के टुकड़े पर मौली लगाकर गूगल और लोबान के धूप से शोधन करके अपने पूजा स्थान में रखदें, किसी महत्वपूर्ण कार्य पर जाते समय उसे हमेंशा अपनी जेब के उपरी हिस्से में या बैग में रखें, इस प्रयोग से कार्य बिना किसी बाधा विध्न के पूर्ण होने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं।
- किसी नये कार्य या महत्वपूर्ण कार्य के लिए जाते समय काली हल्दी को चंदन की तरह घीस कर उसका तिलक लगाकर जाने से कार्य में सफलता

प्राप्त होने की संभावना प्रबल हो जाती हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की नौकरी व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए यह प्रयोग अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

तांत्रिक प्रभाव निवारण प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति पर टोने-टोटके आदि तांत्रिक प्रभाव हो तो उसे काली हल्दी के छोड़े टुकड़े को छेद करके धागा में पिरोकर या किसी ताविज में भर कर धारण करवाया जाये तो शीघ्र ही अशुभ प्रभावों से मुक्ति मिल सकती हैं। कुछ विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी को नवग्रह मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करने से ग्रह जनित पीड़ाएं दूर होती हैं।

आकर्षण प्रयोग

विद्वानों का मत हैं की काली हल्दी को तंत्र शास्त्र में वशीकरण में अत्यंत लाभ प्रद जड़ी बूटी माना जाता है। तंत्र विद्या के जानकारों का मानना हैं की काली हल्दी में अद्भुत आकर्षण शक्ति होने के कारण वशीकरण आदि में भी काली हल्दी का प्रयोग विशेष लाभप्रद होता हैं।

प्रतिदिन काली हल्दी का तिलक लगाने से सभी प्रकार के इच्छित मनुष्यों का आकर्षण हो सकता हैं। काली हल्दी का तिलक एक अत्यंत सरल तंत्रोक्त प्रयोग है।

विशेष नोट: आकर्षण या वशीकरण हेतु काली हल्दी का प्रयोग करने से पूर्व काली हल्दी को किसी योग्य जानकार विद्वान से वशीकरण मंत्र से अभिमंत्रित एवं मंत्र सिद्ध अवश्य करवालें।

* आकर्षण प्रयोग केवल शुभ उद्देश्य हेतु लाभप्रद होता हैं, अनैतिक कार्य या उद्देश्य हेतु किया गया आकर्षण प्रयोग निश्चित रुप से अत्याधिक हानी कारक सिद्ध होता हैं।

स्वास्थ्य वर्धक प्रयोग

यदि कोई व्यक्ति हमेंशा बिमार या अस्वस्थ रहता हो, तो किसी भी गुरूवार से यह प्रयोग प्रारंभ कर के तीन गुरुवार तक प्रयोग करें। गेहूं के आटे के दो पेड़े बनाकर उसमें थोडी गीली चीने की दाल, थोड़ा गुड़ और थोड़ी सी पिसी हुइ काली हल्दी को दबाकर रोगी व्यक्ति के उपर से सात बार घड़ी की दिशा (दक्षिणावर्त/Clockwise) में उतार कर गाय को खिला दें। यह उपाय लगातार तीन गुरूवार करने से विशेष लाभ दिखने लगता हैं।

नजर रक्षा प्रयोग

- ❖ यदि किसी को नजर लग गयी है, तो काले कपड़े में काली हल्दी को बांधकर सात बार नज़र लगे व्यक्ति या बच्चे के उपर से घड़ी की दिशा (दक्षिणावर्त/Clockwise) में उतार कर बहते हुये जल में प्रवाहित कर दें या किसी विरान जगह में फैक दें।
- ❖ यदि किसी के कार्य या व्यवसायीक स्थान पर बार-बार किसी की नज़र लग गई हो तो काली हल्दी को काले कपड़े में बांधकर दोनों हाथों से पूरे कार्य स्थल के भितर सात बार घूमाकर बहते हुये जल में प्रवाहित कर दें या किसी विरान जगह में फैक दें।
- ❖ नज़र रक्षा के लिए काली हल्दी पर मौली लपेट कर पीले कपड़े में बांधकर अपने व्यवसायीक स्थान के मुख्य द्वार पर लटका दें। इस प्रयोग से नज़र से रक्षा होगी एवं धन की वृद्धि भी होती रहेगी।

ग्रह शांति प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में गुरू और शनि दोनो पीड़ित हो, तो ग्रह शांति हेतु किसी शुक्लपक्ष के प्रथम गुरूवार से नियमित रूप से काली हल्दी को चंदन की तरह घीस कर तिलक लगाने से यह प्रयोग दोनों पीड़ित ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं।

धन संचय हेतु प्रयोग

कुछ लोगों की आमदनी उत्तम होने के उपरांत भी धन संचय नहीं कर पाते। उन्हें किसी भी शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार को एक चांदी की डिब्बी में काली हल्दी, नागकेशर व लाल रंग का सिन्दूर को साथ में मिलाकर मां लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के चरणों से

स्पर्श करवा कर धन रखने के स्थान पर रख दें। इस प्रयोग के प्रभाव से धन संचय होने लगता हैं।

*चांदी की डिब्बी उपलब्ध न हो तो स्टील या प्लास्टिक की डिब्बी का प्रयोग करें। डिब्बी को स्थापित करने हेतु शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार के अलावा अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली का मुहूर्त भी शुभ होता हैं।)

मशीनों को खराबी से बचाने हेतु प्रयोग

यदि व्यवसाय या उद्योग में मशीनों में बार-बार खराबी होती रहती हों, तो कालीहल्दी को चंदन की तरह केशर व गंगा जल मिलाकर घीस कर शुक्लपक्ष के प्रथम बुधवार को मशीन पर स्वास्तिक बना दें। इस प्रयोग से से मशीन बार-बार खराब नहीं होती।

मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति हेतु प्रयोग

दीपावली के दिन काली हल्दी और एक चांदी का सिक्का पीले वस्त्रों में लपेट कर उसे धन रखने के स्थान पर रख दें। इस प्रयोग को अगली दिपावली पर पुनः इसी प्रकार करें इस प्रयोग से वर्ष भर मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।

असली नकली की परख

यह काली हल्दी का रंग जब यह हरी होती हैं तब अंदर से हल्के नीले रंग की होती हैं वह सुख ने पर अंदर से गहरे कत्थई या काले रंग की हो जाती हैं। लेकिन असली काली हल्दी पूर्णतः काजल के समान काली नहीं होती, बाजारों में एकदम काजल के समान काली हल्दी मिल जाती हैं, जिसे काले रंग की स्याही या रंग आदि से रंग में डूबा कर तैयार किया जाता हैं। इस प्रकार की हल्दी को प्रायः तेल में भिगो कर कुमकुम सिंदूर आदि से लेप कर बेचा जाता हैं जिससे उसकी नकली होने की बात साधरण व्यक्ति को आसानी से नहीं चलती। लेकिन इस में कपूर से मिलती झुलती सुगन्ध नहीं होती।

असली काली हल्दी की सुगन्ध कपूर से मिलती-झुलती होती हैं यही असली काली हल्दी की पहचान हैं। असली काली हल्दी अंदर से ही गहरे रंग की या काले रंग की होती हैं उपर से नहीं उसका उपर का हिस्सा अदरख के उपरी हिस्से के समान कत्थई रंग से मिलता झुलता होता हैं।

तंत्र विद्या के जानकारों का मत हैं की किसी भी तंत्र प्रयोग को करने पर उससे प्राप्त होने वाले फल केवल प्रयोग कर्ता के आत्मविश्वास और श्रद्धा पर ही निर्भर करते हैं। तंत्र प्रयोग में किसी भी प्रकार की शंका अथवा संदेह होने पर तंत्र के प्रयोग नहीं करने चाहिए। शंका व संदेह भाव से किये गये प्रयोगों का फल नगण्य या प्राप्त नहीं होता हैं।

पाठको के मार्गदर्शन हेतु उपर काली हल्दी के असली व नकलीं चित्र उपर दिये गये हैं।

धन प्राप्ति का अचूक उपाय स्फटिक श्रीयंत्र का पूजन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के भौतिक युग में अर्थ (धन) जीवन कि मुख्य आवश्यक्ताओं में से एक है। धनाढ्य व्यक्तिओं की जीवनशैली को देखकर प्रभावित होते हुवे साधारण व्यकि की भी कामना होती हैं, कि उसके पास भी इतना धन हो कि वह अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखो को भोग ने में समर्थ हों। एसी स्थिमें मेहनत, परिश्रम से कमाई करके धन अर्जित करने के बजाय कुछ लोग अल्प समय में ज्यादा कमाने कि मानसिकता के कारण कभी-कभी गलत तरीकें अपनाते हैं।

जिसके फल स्वरुप एसे लोग धन का वास्तविक सुख भोगने से वंचित रह जाते हैं और रोग, तनाव, मानसिक अशांति जेसी अन्य समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं।

जहां गलत तरीकें से कमाये हुवे धन के कारण समाज एसे लोगो को हीन भाव से देखते हैं। जबकि मेहनत, परिश्रम से कामाये हुवे धन से स्वयं का आत्मविश्वास बढता हैं एवं समाज में प्रतिष्ठा और मान सम्मान भी सरलता से प्राप्त हो जाता हैं।

जो व्यक्ति धार्मिक विचार धाराओं से जुडे हो वह इश्वर में विश्वार रखते हुवे स्वयं कि मेहनत, परिश्रम के बल पर कमाये हुवे धन को हि सच्चा सुख मानते हैं। धर्म में आस्था एवं विश्वास रखने वाले व्यक्ति के लिये मेहनत, परिश्रम करने के उपरांत अपनी आर्थिक स्थिमें उन्नति एवं लक्ष्मी को स्थिर करने हेतु, श्री यंत्र के पूजन का उपाय अपनाकर जीवन में किसी भी सुख से वंचित नहीं रह सकते, उन्हें अपने जीवन में कभी धन का अभाव नहीं रहता। उनके समस्त कार्य सुचारु रुप से चलते हैं। लक्ष्मी कृपा प्राप्ति के लिए श्रीयंत्र का सरल पूजन विधान जिसे अपना कर साधारण व्यक्ति विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस में जरा भी संशय नहीं हैं।

श्रीयंत्र का पूजन रंक से राजा बनाने वाला एवं व्यक्ति कि दरिद्रता को दूर करने वाला हैं।

- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र को पूजन के लिये स्थापित करें। (प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र किसी भी योग्य विद्वान ब्राह्मण या योग्य जानकार से सिद्ध करवाले)
- श्री यंत्र को प्रत्येक शुक्रवार को दुध, दही, शहद, घी और शक्कर (गुड़) अर्थात पंचामृत बनाकर स्नान कराये।
- स्नान के पश्चयात उसे लाल कपडे से पोछ दें।
- श्री यंत्र को किसी चांदी या तांबे कि प्लेट में स्थापीत करें।
- श्री यंत्र के नीचे 5 रुपये या 10 रुपये का नोट रखदें। (5,10 रुपये का सिक्का नहीं)
- श्री यंत्र स्थापित करने वाली प्लेट में श्रीयंत्र पर स्फटिक कि माला को चारों ओर घुमाते हुवे स्थापित करें।
- श्री यंत्र के उपर मौली का टुकडा 3-5 बार घुमाते हुवे अर्पित करें।
- श्री यंत्र के उपर सुखा अष्ट गंध छिडकें।
- यदि संभव हो तो लाल पुष्प अर्पित करें। (कमल, मंदार(जासूद) या गुलाब हो तो उत्तम)
- धूप-दीप इत्यादी से विधिवत पूजन करें।
- उपरोक्त विधन प्रति शुक्रवार करें एवं अन्य दिन केवल धूप-दीप करें।

- किसी एक लक्ष्मी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें। श्रीसूक्त, अष्ट लक्ष्मी स्तोत्र इत्यादी का पाठ करें यदि पाठ करने में आप असमर्थ होतो बाजार में श्रीसूक्त, अष्ट लक्ष्मी इत्यादी स्तोत्र कि केसेट सीडी मिलती हैं उसका श्रवण करें।
- पूजा में जाने-अनजाने हुई गलती के लिए लक्ष्मीजी का स्मरण करते हुवे क्षमा मांगकर सुख, सौभाग्य और समृद्धि कि कामना करें।
- प्रति शुक्रवार उपरोक्त पूजन करने से जीवन में किसी भी प्रकार का आर्थिक संकट नहीं आता।
- यदी आर्थिक संकट से परेशान हैं तो श्री यंत्र के पूजन से समस्त प्रकार के आर्थिक संकट धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं।

नोट: श्री यंत्र के के नीचे रखा हुवा नोट प्रति एक-दो मास में एक बार किसी देवी मंदीर में भेट कर दें। (लाभ प्राप्त होने पर बदले)

- प्रथन बार रखा हुवा नोट श्री यंत्र के पूजन से लाभ होने के बाद ही बदले। लाभ प्राप्त होना शुरु होने तक नोट को रखे रहें।
- लाभ प्राप्त होना शुरु होने के पश्चयात प्रति माह में एक बारे प्रतिपदा(एकम) को पुराना नोट बदल कर नये नोट रखें।
- जेसे-जेसे लाभ प्राप्त होने लगे आप के अनुकूल कार्य हो ने लगे तो नोट कि रकम बढाते रहें। अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

उदाहण: यदि पहले 5 रुपये का नोट रखा हैं तो उस्से लाभ होने के पश्चयात नोट बदलते हुवे 10 रुपये का नोट रखे। 10 रुपये का नोट रखने से लाभ होने के पश्चयात नोट बदलते हुवे 20 रुपये का नोट रखे। इसी प्रकार नोट को बदते रहें इस्से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

अधिक लाभ प्राप्ति हेतु सामान्य नियम:

पूजन के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें। पूजन के दिन सुगंधित तेल, परफ्यूम, इत्र का प्रयोग करने से बचे। बिना प्याज-लहसून का शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। शुक्रवार सफेद मिष्ठान भोजन में ग्रहण करें।

सप्त श्री का चमत्कारी प्रयोग

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दीपावली के दिन बही-खाते के पूजन के समय बही-खाते में उपरोक्त क्रममें लाल रंग की कलम य पेन से **श्री** लिखे। पहले एक बार **श्री** लिखे, फिर दो बार **श्री श्री** लिखे, फिर तीन बार **श्री श्री श्री,** इस प्रकार क्रम को बढाते जाए आखीर में सात बार **श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री** लिखे, सप्तश्री के नीचे अपने ईष्ट का नाम लिखे या **ॐ श्रीं लक्ष्मी दैव्ये नमः लिखे।** फिर धुप-दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
ॐ श्रीं लक्ष्मी दैव्ये नमः

उक्त प्रयोग करने से आनेवाला नया वर्ष व्यवसाय में आर्थिक द्रष्टि से सुख, समृद्धि लेकर आयेगा और अत्याधिक लाभदायक रहेगा।

जिन लोगो के पास लक्ष्मी (धन) स्थिर नहीं रहता। लक्ष्मी आने से पूर्व जाने को तत्पर होती हैं। उन्हें अपनी जेब में या मनीपर्स में एक स्फेद कागज पर उपरोक्त तरीके से **श्री** लिख कर रखना चाहिए। सप्त श्री लिखने से लक्ष्मी लम्बे समय तक स्थिर रहने के योग बनते हैं वह नये स्रोत से धन लाभ के भी प्रबल योग बनते हैं। (अष्टगंध की स्याही बनाकर अनार की कलम से लिखना अति उत्तम रहता हैं।)

- उक्त तरीके से सप्त श्री को अपनी अलमारी, गल्ला (कैश बोक्श) या धन रखने के स्थान पर कुमकुम या अष्टगंध से अपने दाहीने हाथ की अनामिका उंगली से लिखने पर भी यह अत्याधिक लाभप्रद रहता हैं।
- उक्त तरीके से सप्त श्री को चांदि या सोने के पत्तर पर यंत्र स्वरुप भी बनाया सकता हैं। तांबे चांदी के पत्तर में बनाते समय ध्यान रखे की पत्तर की सतह पर श्री उपर की ओर उभरी हुई हो, नीचे की ओर खुदी हुई न हों।

इस दीपावली पर स्वयं सिद्ध करें लक्ष्मी मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

मंत्र :

1. ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः। (Om Shree Mahalakshmai Namah)
2. श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये। (Shreem Hreem Shreem Kamale Kamalalaye)
3. श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा । (Shreem Hreem Kleem Aim Kamalavasinyai Swaha)
4. ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। (Hreem Shreem Kleem Mahalakshmai Namah)
5. ॐ श्रीं श्रियै नमः। (Om Shreem Shriyai Namah)
6. ॐ ह्री श्रीं क्रीं श्रीं क्रीं क्लीं श्रीं महालक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय पूरय चिंतायै दूरय दूरय स्वाहा ।

   (Om Hreem Shreem Kreem Shreem Kreem Kleem Shreem Mahalakshmi Mam Gruhe Dhanam Pooraya Pooraya Chintayai Dooraya Dooraya Swaha)
7. धन लाभ एवं समृद्धि मंत्र

   ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन महालक्ष्म्यै अस्मांक दारिद्र्य नाशय प्रचुर धन देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ।

   (Om Shreem Hreem Kleem Tribhuvan Mahalakshmai Asmank Daridray Nashay Prachur Dhan Dehi Dehi Kleem Hreem Shreem Om)
8. अक्षय धन प्राप्ति मंत्र

   ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ॐ ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्री ॐ ।

   (Om Shreem Hreem Kleem Aim Soum Om Hreem Ka Ae Ee La Hreem Ha Sa Ka Ha La Hreem Sakal Hreem Soum Aim Kleem Hreem Shreem Om)

कैसे करें मंत्र जाप :-

धनतेरस या दीपावली के दिन संकल्प लेकर प्रातःकाल स्नान करके पूर्व या उत्तर दिशा कि और मुख करके लक्ष्मी कि मूर्ति या चित्र की पंचोपचार या दक्षोपचार या षोड्षोपचार से पूजा करें।

शुद्ध-पवित्र आसन ग्रहण कर स्फटिक कि माला से मंत्र का जाप १,५,७,११ माला जाप पूर्ण कर अपने कार्य उद्देश्य कि पूर्ति हेतु मां लक्ष्मी से प्राथना करें।

अधिकस्य अधिकं फलम्।

जप जितना अधिक हो सके उतना अच्छा है। यदि मंत्र अधिक बार जाप कर सकें तो श्रेष्ठ। प्रतिदिन स्नान इत्यादिसे शुद्ध होकर उपरोक्त किसी एक लक्ष्मी मंत्र का जाप 108 दाने कि माला से कम से कम एक माला जाप अवश्य करना चाहिए।

उपरोक्त मंत्र के विधि-विधान के अनुसार जाप करने से मां लक्ष्मी कि कृपा से व्यक्ति को धन की प्राप्ति होती है और निर्धनता का निवारण होता है।

कुबेर जी के छः नामों का चमत्कार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

1. वैश्रवण
2. पक्वाश
3. पिंगल
4. विविध
5. वित्तेश
6. कुबेर

आदि गुरु शंकराचार्यजी के अनुसार उक्त छ: नामों को; हाथों में स्वर्ण से भरे कलश, बड़ी तोंदवाले, स्वर्ण की आभा युक्त, विविध रत्नों-आभुषण से दीप्तिमान, नौ निधियों से प्रकाशित दुर्लभ रत्नों से निर्मित कमल आसन पर, वटवृक्ष के नीचे विराजमान धन के अधिपति कुबेरजी का ध्यान करते हुए जप-पूजन इत्यादि करना चाहिए।

कुबेर जी के उक्त 6 नामों का जप-हवन करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

सुख-समृद्धि, लक्ष्मी प्राप्ति तथा ऋणमुक्ति के लिए घी व खीर का हवन करना चाहिए।

घी के साथ तिलों से हवन करने से ऋण मुक्ति होती है।

घी के साथ बिल्व से हवन करने से अक्षत धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

देवी महालक्ष्मी के 18 पुत्र वर्ग की महिमा

धर्म शास्त्रों के मतानुसार देवी महालक्ष्मी के 18 पुत्रवर्ग का उल्लेख वर्णित हैं। विद्वानो का अनुभव हैं की आर्थिक उन्नति एवं स्थिरता के लिए, देवी महालक्ष्मी के इन नामो का स्मरण एवं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से धन लाभ अवश्य होता हैं।

मंत्र जप का शुभारंभ धनतेरस, दीपावली, अक्षय तृतिया इत्यादि शुभ मुहूर्त या किसी भी शुक्रवार से करें। उस दिन प्रात:काल स्नान आदि से निवृत्त होकर देवी महालक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के सामने शुद्ध घी का दीप प्रज्वलित करके

मंत्र का जप प्रारंभ करें। इस दौराण देवी से अपनी आर्थिक स्थिती में सुधार के लिए कामना करें।

मां लक्ष्मी के 18 पुत्र के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं

1. ॐ देवसखाय नम:।
2. ॐ चिक्लीताय नम:।
3. ॐ आनन्दाय नम:।
4. ॐ कर्दमाय नम:।
5. ॐ श्रीप्रदाय नम:।
6. ॐ जातवेदाय नम:।
7. ॐ अनुरागाय नम:।
8. ॐ सम्वादाय नम:।
9. ॐ विजयाय नम:।
10. ॐ वल्लभाय नम:।
11. ॐ मदाय नम:।
12. ॐ हर्षाय नम:।
13. ॐ बलाय नम:।
14. ॐ तेजसे नम:।
15. ॐ दमकाय नम:।
16. ॐ सलिलाय नम:।
17. ॐ गुग्गुलाय नम:।
18. ॐ कुरूण्टकाय नम:।

***

स्थिर लक्ष्मी के लिए करें इन सात दुर्लभ सामग्रीयों के उपाय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रक्त गुंजा

गुंजा एक दुर्लभ वनस्पति का बीज हैं। तंत्र शास्त्र में यह एक दुर्लभ एवं अत्यन्त प्रभावशाली वस्तु मानी जाती है। गुंजा प्रायः सफदे, लाल व काले रगं के बीज स्वरुप में पायी जाती हैं। विभिन्न तंत्र क्रियाओं में गुंजा बीज के साथ-साथ गुंजा के जड़ का भी विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं।

गुंजा बीजों का प्रयोग विभिन्न कार्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया जाता हैं। लाल गुंजा का प्रयोग विशेष रुप से लक्ष्मी प्राप्ति के लिये किया जाता हैं। लाल गुंजा पर एक काले रंग का छोटा बिंदू होता हैं। एसा माना जाता हैं की रक्त गुंजा से घर में सुख-समृद्धि की वृद्धि तो होती ही हैं साथ ही साथ में मां महालक्ष्मी की कृपा भी घर पर बनी रहती हैं।

- दीपावली के दिन रक्त गुंजा के इक्कीस या ग्यारह दानों को गंगा जल से पवित्र करके पूजा स्थान रखदेना चाहिए। पूजा के पश्चयात गुंजा के दानों को अपनी तिजोरी, कैशबोक्स, गल्ले में लाल कपड़े में बांधकर से दिनों दिन परिवार की आर्थिक समृद्धि बढ़ती हैं।
- मंत्र द्वारा सिद्ध रक्त गुंजा के इक्कीस या ग्यारह दानों को अपने व्यवसाय या ओफिस में रोकड़ रखने के साथ में रखने से धन की कभी कमी नहीं होती और कैश बोक्स कभी खाली नहीं रहता, लक्ष्मी जी का आशिर्वाद बना रहता हैं।
- यदि मंत्र सिद्ध कि हुई रक्त गुंजा की माला को कोई व्यक्ति गले में धारण कर्ता हैं तो वह सर्वजन वशीकर के समान प्रभावशाली होती हैं। रक्त गुंजा की माला को केवल प्रयोग के समय या किसी महत्व पूर्ण कार्य या व्यक्ति से मिलते समय ही धारण करें, अनावश्य होने पर उसे उतार कर अपने पूजा सथान में रखदें।
- किसी महत्वपूर्ण कार्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु मंत्र सिद्ध रक्त गुंजा के इक्कीस दानों को अपने साथ लेकर घर से बाहर निकले, कार्य उद्देश्य पूर्ण होने पर उसे बहते जल में प्रवाहित कर दें।

नाग केशर

नाग केसर अति पवित्र एवं उर्लभ वनस्पतियों में से एक मानी जाती हैं। इसे नागकेश्वर के नाम से भी जाना जाता हैं। धार्मिक मान्यताओं में नाग केशर का स्थान प्रमुख वस्तुओं अग्रस्त हैं। तंत्र गंथों में नाग केशर के विभिन्न प्रयोगों का वर्णन मिलता हैं। धनप्राप्ति एवं सुख-समृद्धि हेतु भी नाग केशर का उपयोग किया जाता हैं।

- चांदी (यदि उपल्बध नहीं को अन्य धातु) की एक छोटी सी डिब्बी में नागकेशर को शहद के साथ मिलाकर ढ़क्कन लगाकर उसे बंद करदें। दीपावली की रात्रि में उसे पूजन के बाद में तिजोरी में रखदे। अगली दीवाली को उस डिब्बी को खोल कर नागकेशर और शहद को बदल दें। एकबार डिब्बी रखदेने के बाद उसे खोले नहीं उसे बंध ही रहने दे।
- धन-समृद्धि की प्राप्ति हेतु एक नविन पीले वस्त्र में नागकेशर, साबुत हल्दी, सुपारी, एक तांबे का सिक्का, एक पांच या दस का सिक्का, अक्षत को एक साथ कर के उसको कपडे में बांध दें। फिस उसे धूप-दीप से पूजन करके अपनी तिजोरी में रखकर प्रतिदिन पूजन के समय उसे धूप दें तो धनलाभ होने लगेगा।
- दीपावली की रात या अन्य किसी शुभ मुहूर्त में नागकेशर और पांच सिक्कों को लेकर उसे पूजा स्थान पर रखदे फिर पूजन की समाप्ति के बाद उसे एक पीले कपडे में बांध कर अपने व्यवसायीक प्रतिष्ठान के गल्ले, तिजोरी आदि धन रखने वाले स्थान पर रख दें। इस प्रयोग से व्यक्ति को कभी धन की कमी नहीं रहेगी।

❖ धन प्राप्ति के लिए के लिए सोमवार युक्त पूर्णिमा के दिन शिवमंदिर में शिवलिंग का कच्चे, दूध, दही, शहद चीनी और घी अर्थात पंचामृत से अभिषेक करें। फिर शिवलिग का गंगाजल से अभिषेक करें। तत्पश्चयात पांच बिल्वपत्रों के साथ में पांच नागकेशर को शिवलिंग पर अर्पित करें। यह क्रिया प्रतिदिन अलगी पूर्णिमा तक नियमित रुप से करें। अंतिक दिन चढ़ाए गये नागकेशर एवं बिल्वपत्रों में से एक बिल्वपत्र एवं थोड़ा नागकेशर घर वापस ले आये उसे अपनी तिजोरी में रखदें। इस प्रयोग से अत्याधिक धनलाभ की प्राप्ति होती हैं।

गोमति चक्र

गोमति चक्र समुद्र से प्राप्त होने वाली दुर्लभ वस्तुओं में से एक हैं। क्योकि यह आसानी से प्राप्त नहीं होता यह एक सफेद रंगका गोलाकार दिखने में सीप से मिलता-जुलता प्रतित होता हैं। हालांकी कई गोमति चक्र पूर्णतः सफेद नहीं होती उसके उपर गेहुवें और काले रंग की पलती धारीया होती हैं, जब यह धारीया घीस या उसे पोलिस किया जाता हैं तब यह सफेद रंग का नजर आने लगता हैं। इस के उपर चक्र जैसे आकृतिया कृदरति और पर पाई जाती हैं इस लिए इसे गोमति चक्र कहते हैं।

धार्मिक मान्यता के अनुसार समुद्र से प्राप्त होने वाले सभी वस्तुये प्रायः लक्ष्मी प्राप्ति हेतु पूजन में प्रयुक्त होती हैं। गोमति चक्र भी समुद्र से प्राप्त होता हैं और लक्ष्मी की प्रिय वस्तु होने से लक्ष्मी पूजन में इसका विशेष महत्व हैं।

पुरातन काल से ही गोमति चक्र को लक्ष्मी प्राप्ति के अलागा अन्य तंत्र प्रयोगो एवं कामना पूर्ति हेतु भी इसका विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। क्योकि विद्वानों के मतानुसार सिद्ध गोमति चक्र से विभिन्न मनोकामनाएं सरलता से पूर्ण की जासकती हैं।

❖ दीपावली की रात को पांच मंत्र सिद्ध गोमति चक्र को स्थापित करके उसका साक्षात लक्ष्मी रुप में पूजन करने से उसका विधिवत पूजन करने से व्यक्ति को जीवन में निरंतर धन की प्राप्ति होती रहती हैं।

❖ दीपावली के दिन 11 गोमती चक्र और 11 पीली कोडियों दोनों को को एक पीले कपडे पर रख रखकर कर पूजन करें। फिर "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं" मंत्र का पांच माला करके उसे कपडे में बांधकर अपने तिजोरी में स्थापित करने से धन लाभ की प्राप्ति होती हैं।

पीली कौड़ियां

पौराणिक काल से ही कौड़ियों को सौभाग्य कारक मानी जाती हैं। देश एवं विदेश की विभिन्न सभ्यताओं एवं प्रांतो में कौड़ियों के विभिन्न छोट-बडे प्रयोग होते आये हैं। पूरातन काल में जन सिक्को का चलन नहीं था तब लोग कौड़ियों का नगद्दी के रुप में प्रयोग करते थे। लोग कौड़ियों का आदान-प्रदान करके चिज-चस्तु खरिदते और बेचते हैं।

धार्मिक मान्यता के अनुसार समुद्र से प्राप्त होने वाले सभी वस्तुये प्रायः लक्ष्मी प्राप्ति हेतु पूजन में प्रयुक्त होती हैं। कौड़ियां भी समुद्र से प्राप्त होता हैं और पीली कौड़ियां लक्ष्मी की अति प्रिय वस्तु होने से लक्ष्मी पूजन में इसका विशेष महत्व हैं।

❖ दीपावली की रात में 11 पीली कौड़ियों पूजा स्थान में रखदें पूजन की समाप्ति पर उसे अपने तिजोरी में गहने इत्यादि के साथ में रखदें तो परिवार में गहने-जेवरात की वृद्धि होने लगती हैं। अगले वर्ष पुनः दीपावली पूजन के समय कौड़ियों को बदलदे।

❖ दीपावली की रात में 11 पीली कौड़ियों को अपने घर या व्यवसायीक स्थान में तिजोरी में रखने से व्यापार और धन की में वृद्धि होती हैं।

हकीक

हकीक एक प्रकार का उपरत्न हैं, जिसका उपयोग विभिन्न तंत्र प्रयोग एवं धनप्राप्ति हेतु विशेष रुप से किया जाता हैं। यह एक अत्यंत प्रभावशाली पत्थर माना जाता हैं।

हकीक के प्रभावों के विषय कुछ जानकार विद्वानो का अनुभव हैं की हकीक को यदि कोई व्यक्ति धारण नहीं करके केवल अपने साथ रखता हैं तो भी वह अपना चमत्कारी प्रभाव दिखा ही देता हैं।

- दीपावली के दिन पूजान के समय 21 हकीक को स्थापीत करदे पूजन के पश्चयात उसे दीपावली के दिन ही जमीन में गाढ़देने से व्यक्ति को निरंतर धन लाभ होता रहता हैं।
- मनोकामना पूर्ति हेतु ग्यारह हकीक पत्थर को अपने पूजा स्थान पर रख कर अलगले दिन उसे मंदिर में चढाने से मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती हैं।
- दीपावली के दिन हकीक माला से लक्ष्मी मंत्र का एक माला जप करके। माला को धारण करने से देवी लक्ष्मी की हमेंशा कृपाद्रष्टि बनी रहती हैं। मंत्र: "ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः।"
- लक्ष्मी जी के चित्र को 27 हकीक पत्थर के उपर स्थापित करने से व्यक्ति को निश्चित रुप से आर्थिक लाभ प्राप्त होता हैं।

लघु श्रीफल

लघु श्रीफल एक प्रकार का छोटे स्वरुप का नारियल होता हैं। जिसके ऊपर नारियल के समान ही जटाएं होती हैं जो करीब एक ईंच जितना बडा होता हैं। लघु श्रीफल को नारियल का लघुरुप माना जाता हैं। लघु श्रीफल का प्रयोग विशेष रुप से लक्ष्मी प्राप्ति हेतु किया जाता हैं।

क्योकि लघु श्रीफल मां महालक्ष्मी का यह प्रिय फल मानाजाता हैं और एसी मान्यता हैं की जिसके पास लघु श्रीफल होता हैं देवी लक्ष्मी निश्चित रुप से उस पर कृपा करती हैं। लघु श्रीफल के पूजन से मां लक्ष्मी खिंची चली आती हैं।

- जिस भी घर में लघु श्रीफल होता हैं वहां सुख-संपन्नता और वैभव का वास होता हैं।
- यदि लघु श्रीफल को व्यवसायीक स्थान पर रखने से व्यापार में दिन प्रति दिन उन्नति होती रहती हैं।
- विद्वानो का कथन हैं की यदि किसी व्यक्ति को सौभाग्य से 11 लघु श्रीफल प्राप्त हो जाये तो उसके जन्मों-जन्म की दरिद्रता का अंत हो जाता हैं और यदि किसी व्यक्ति के घर में 1 लघु श्रीफल का पूजन होता हों वहां से दुखः, दरिद्रता कोसो दूर रहती हैं।

काली हल्दी

जिस प्रकार से हल्दी पीले रंगी को होती हैं। उसी प्रकार एक दुर्लभ जाती की काले रंगकी हल्दी भी पाई जाती हैं। काली हल्दी को कृष्ण हरिद्रा के नाम से जाना जाता हैं। काली हल्दी की सुगंध कपूर से मिलती-जुलती होती हैं। काली हल्दी को मुख्यतः तंत्र क्रियाओं एवं लक्ष्मी प्राप्ति हेतु एक दुर्लभ औषधि मानते हैं।

- जिस भवन में मंत्र सिद्ध काली हल्दी का पूजन करने से भवन में धन-सौभाग्य की स्वतः वृद्धि होने लगती हैं।

दीपावली के दिन या अन्य किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को धूप-दीप आदि से पूजन कर के अपनी तिजोरी या धन रखने वाले स्थान पर रखने से धन का कभी अभाव नहीं रहता हैं।

धन प्राप्ति और सुख समृद्धि के लिये वास्तु सिद्धांत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के भौतिक युग में हर कार्य धन के उपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुपसे निर्भर करता हैं इस लिये प्रत्येक व्यक्ति कि यही इच्छा होती हैं कि उसके पास अपार धन दौलत एवं जीवन उपयोगी सारी सुख सुविधाए उप्लब्ध हो जो एक समृद्ध व्यक्ति के पास में होती हैं, एवं उसकी समृद्धि एवं उन्नति दिन प्रतिदिन बढती जाए।

आप अपने घर में धन एवं बहुमूल्य आभूषण, जवाहरात इत्यादि कि सुरक्षा हेतु अलमारी या कैश बोक्स रखते हैं, जिस्से धन सुरक्षित रहे और उसमे बढ़त होती रहें। इसके लिये वास्तु से संबंधित धन संचय हेतु कुछ उपाय।

वास्तु के अनुसार धन एवं बहु मूल्य सामग्री को उत्तर दिशा में रखे। उत्तर दिशा में कुबेर का वास होता हैं। एवं कुबेर धन के देवता हैं एवं उत्तर दिशा पर उनका प्रभाव रहता हैं। इस लिये अपने व्यवसाय स्थान या घर में धन को सुरक्षित रखने हेतु उत्तर दिशा का चुनाव करें।

उत्तर - व्यवसाय स्थान या घर में अलमारी को उत्तर दिशा के कमरे में उसे दक्षिण दिशा की दीवार से सटाकर एसे रखे कि उसका मुख उत्तर कि तरफ रहे या आपका मुख अलमारी खोलते या बंध करते समय दक्षिण दिशा कि और रहें। उत्तर कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में रखे गये धन एवं आभूषण कि निरंतर वृद्धि होती रहती हैं।

पूर्व - पूर्व कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में धन रखने से उसमें बढ़ोतरी होती रहती है। लेकिन उत्तर को सर्व श्रेष्ठ मानागया हैं।

दक्षिण - दक्षिण कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में धन रखने से धन एवं आभूषण जो हैं उसमे में कमी आजाति हैं क्योकि एसी स्थिति मे अलमारी या कैश बोक्स होने से आमदनी से खर्चा अधिक होता हैं एवं संचय किये गये धन में भी कमी आजाती हैं। एवं व्यक्ति पर कर्ज चढ जाता हैं।

पश्चिम - पश्चिम कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में धन एवं आभूषण रखने से उस घर मे धन कडी मेहनत से कभी कभार प्राप्त होता हैं एवं टिक पाता हैं, अन्य था अन्य संबंधि या मित्र वर्ग से सहायता से प्राप्त होने वाला धन भी टिकता नहीं हैं।

धनत्रयोदशी पर यम को करे दीपदान होगा अकालमृत्यु रक्षण ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

धनत्रयोदशी के दिन किये जाने वाले कर्म में एक महत्त्वपूर्ण कर्म यम के निमित्त किया जाने वाला दीपदान हैं।

हिन्दू धर्म शास्त्र में निर्णयसिन्धु के अंतर्गत निर्णयामृत और स्कन्दपुराण उल्लेख हैं कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी की संध्या प्रदोष काल के समाय घर से बाहर यम के निमित्त दीपदान करने से परिवार में अकालमृत्यु का भय दूर होता हैं।

शास्त्रोंक्त मत के अनुसार यमदेवता भगवान सूर्य और माता संज्ञा के पुत्र हैं। वैवस्वत मनु, अश्विनीकुमार एवं रैवंत उनके भाई हैं तथा यमुना उनकी बहन है। यमदेव की सौतेली माँ छाया से शनि, तपती, विष्टि, सावर्णि मनु आदि 10 सौतेले भाई -बहन भी हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार यम शनि ग्रह के अधिदेवता हैं।

यमदेवता प्रत्येक प्राणी के शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार फल देने का कार्य करते हैं। इसी कारण उन्हें यमदेवता को धर्मराज कहा गया हैं। क्योकि अपने कर्तव्य के प्रति यमदेव त्रुटि रहित कार्य व्यवस्था की स्थापना करते हैं। यमदेव का अपना अलग से एक लोक हैं, जिसे उनके नाम से ही यमलोक कहा जाता हैं। ऋग्वेद में उल्लेख है कि यमलोक में निरन्तर अनश्वर अर्थात् जिसका नाश न हो ऐसी ज्योति जगमगाती रहती हैं। यमलोक अनश्वर हैं और यमलोक में कोई मरता नहीं हैं। यमदेवताके स्वरुप का वर्णन करते हुवे ग्रंथकारो ने लिखा हैं। यम की आँखें लाल हैं, उनके हाथ में पाश रहता हैं। इनका शरीर नीला है और ये देखने में उग्र हैं। भैंसा इनकी सवारी हैं। ये साक्षात् काल हैं।

यमदीपदान:

यमदीपदान के विषय में स्कन्दपुराण में कहा गया है कि कार्तिक के कृष्णपक्ष में त्रयोदशी के प्रदोषकाल में यमराज के निमित्त दीप और नैवेद्य समर्पित करने पर अकाल मृत्यु का नाश होता हैं। यह स्वयं यमराज का कथन था।

यमदीपदान केवल प्रदोषकाल में करने का विधान हैं। यमदीपदान के लिए मिट्टी का एक बड़ा दीपक लेकर उसे उसे स्वच्छ जल से धो लेना चाहिए। फिर स्वच्छ रुई लेकर दो लम्बी बत्तियाँ बना लें।

बत्तियां इतनी लम्बी बनाये की दीपक से उसके दोनों और के छोर निकले हुए हो। बत्तियाँ को दीपक में एक-दूसरे पर इस प्रकार रखें कि दीपक के बाहर बत्तियों के चार मुँह दिखाई दें। अब दीपक को तिल के तेल से भर दें और साथ ही उसमें एक छुटकी काले तिल भी डाल दें।

प्रदोषकाल में इस प्रकार विधि से तैयार किए गए दीपक का रोली, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करना चाहिए। तत पश्चात् घर के मुख्य द्वार पर बाहर थोड़ी सी खील, चावल अथवा गेहूँ से ढेरी बनाकर उसके ऊपर दीपक को रखना चाहिए। दीपक को ढेरी पर स्थापित करने से पूर्व उसे प्रज्वलित कर लें और दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए चारमुँह के दीपक को खील, चावल, गेहूँ आदि की ढेरी के ऊपर रख दें।

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन च मया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतामिति॥

अर्थात्: त्रयोदशी को दीपदान करने से मृत्यु, पाश, दण्ड, काल और लक्ष्मी के साथ सूर्यनंदन यम प्रसन्न हों।

उक्त मन्त्र के उच्चारण के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए यमदेव को दक्षिण दिशा में नमस्कार करें।

ॐ यमदेवाय नमः। नमस्कारं समर्पयामि॥

तत पश्चयात पुष्प दीपक के पास रख दें और पुनः हाथ में नैवेद्यं के रुप में एक बताशा लें तथा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे दीपक के समीप ही रख दें ।

ॐ यमदेवाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥

तत पश्चयात हाथ में थोड़ा सा जल लेकर आचमन के निमित्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक के समीप जल को छोड़े।

ॐ यमदेवाय नमः। आचमनार्थे जलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात पुनः यमदेव को **ॐ यमदेवाय नमः।** मन्त्र का उचारण करते हुए दक्षिण दिशा में नमस्कार करें।

यमदीपदान के पीछे छुपा गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रोंक्त मत के अनुसार धनत्रयोदशी के किये जाने वाले कर्मो में यमदीपदान को विशेष प्रमुखता दी जाती हैं। लेकिन धनत्रयोदशी पर यमदीपदान क्यों किया जाता हैं इस के पीछे छूपी धार्मिक मान्यता से कम लोग ही परीचित होंगे!

हिन्दू धर्म में किये जाने वाली प्रत्येक व्रत-तयोहार, उत्सव, पूजन विधि-विधान, इत्यादि के पीछे कोई न कोई पौराणिक कथा अवश्य जुड़ी होती हैं । इसी प्रकार धनत्रयोदशी पर यमदीपदान करना भी इसी प्रकार पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ हैं। स्कन्दपुराण में वैष्णवखण्ड के अन्तर्गत कार्तिक मास महात्म्य में इससे सम्बन्धित पौराणिक कथा का संक्षिप्त उल्लेख किया गया हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार एक बार यमदूत बालकों एवं युवाओं के प्राण हरते समय परेशान हो उठे। यमदूत को बड़ा दुःख हुआ कि वे बालकों एवं युवाओं के प्राण हरने का कार्य करते हैं, परन्तु यमदूत करते भी क्या? उनका कार्य ही प्राण हरना ही हैं। यमदूत अपने कर्तव्य से वे कैसे विमुख होते? यमदूत के लिए एक और कर्तव्यनिष्ठा का प्रश्न था, दुसरी ओर जिन बालक एवं युवाओं का प्राण हरकर लाते थे, उनके परिजनों के दुःख एवं विलाप को देखकर स्वयं को होने वाले मानसिक क्लेश का प्रश्न था। ऐसी स्थिति में जब यमदूत बहुत दिन तक रहने लगे, तो विवश होकर वे अपने स्वामी यमराज के पास पहुँचे और कहा कि महाराज आपके आदेश के अनुसार हम प्रतिदिन वृद्ध, बालक एवं युवा व्यक्तियों के प्राण हरकर लाते हैं, परन्तु जो अपमृत्यु के शिकार होते हैं, उन बालक एवं युवाओं के प्राण हरते समय हमें मानसिक क्लेश होता हैं। उसका कारण यह है कि उनके परिजन अत्याधिक विलाप करते हैं और जिससे हमें बहुत अधिक दुःख होता हैं। क्या बालक एवं युवाओं को असामयिक मृत्यु से छुटकारा नहीं मिल सकता है?

यमदूत के मुख से इतना सुनकर धर्मराज बोले दूतगण तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया हैं। इससे मृत्यु लोकवासियों का कल्याण होगा। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को प्रतिवर्ष प्रदोषकाल में जो अपने घर के दरवाजे पर निम्नलिखित मन्त्र से उत्तम दीप देता हैं, वह अपमृत्यु होने पर भी यहाँ ले आने के योग्य नहीं है ।

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन च मया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतामिति॥

उसके बाद से ही अपमृत्यु अर्थात् असामयिक मृत्यु से बचने के उपाय के रूप में धनत्रयोदशी पर यम के निमित्त दीपदान एवं नैवेद्य समर्पित करने का कर्म प्रतिवर्ष किया जाता हैं।

यमराज की सभा: यमराज की सभा का वर्णन करते हुए ग्रंथ कारों ने लिखा हैं कि देवलोक की चार प्रमुख सभाओं में से एक है यमसभा । इस सभा का निर्माण विश्वकर्मा जी ने किया था। यमसभा अत्यन्त विशाल सभा है, इसकी 100 योजन लम्बाई एवं 100 योजन चौड़ाई है। इस प्रकार यह वर्गाकार है। यमसभा का तापक्रम अत्यन्त सुहावना अर्थात् न तो अधिक शीतल है और न ही अधिक गर्म है । यमसभा सभी के मन को अत्यन्त आनन्द देने वाली है। यमसभा में न शोक, न बुढ़ापा है, न भूख है, न प्यास है और न ही यमसभा में कोई अप्रिय वस्तु हैं। इस प्रकार यमसभा दुःख, कष्ट एवं पीड़ा के करणों का अभाव रहता हैं। यमसभा में दीनता, थकावट अथवा प्रतिकूलता नाममात्र को भी नही है। यमसभा में सदैव पवित्र सुगन्ध वाली पुष्प मालाएँ एवं अन्य कई रम्य वस्तुएँ विद्यमान रहती हैं।

यमसभा में अनेक राजा, ऋर्षि और ब्रह्मर्षि यमदेव की उपासना करते रहते हैं। ययाति, नहुश, पुरु, कार्तवीर्य, अरिष्टनेमी, कृति, निमि, मान्धाता, प्रतर्दन, शिवि आदि राजा मृत्यु के उरान्त यहां बैठकर धर्मराज की उपासना करते हैं। कठोर तपस्या करने वाले, उत्तम व्रत का पालन करने वाले सत्यवादी, शान्त, संन्यासी तथा अपने पुण्यकर्म से शुध्द एवं पवित्र महापुरुषों का ही यमसभा में प्रवेश होता हैं।

दीपावली के दिन कैसे करें बहीखाता तुला पूजन?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में पंचमहा पर्व दीपावली पर व्यवसाय कार्य से जुडे लोग गणेश पूजन, लक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजन, आदि पूजनो के साथ-साथ अपने व्यवसाय से जुडे हिसाब-किताब रखने हेतु हर वर्ष दीपावली पर बही-खाता, तुला (तराजू), लेखनी (कलम) आदिका पूजन भी करते हैं।

सर्वप्रथम व्यवसायीक स्थान के मुख्यद्वार के दोनों ओर की दिवार पर सिन्दूर से शुभ-लाभ और ॐ और स्वस्तिक के चिह्न अंकित करें। पश्चयात इन शुभ चिह्नों का रोली, पुष्प आदि से पूजन करें।

पूजन के समय ॐ देहलीविनायकाय नमः। मंत्र जा उच्चारण करें।

अब क्रमश दवात अर्थात (Inkstand), बहीखाता, तुला (तराजू) आदि का पूजन करना चाहिए।

दवात का पूजन: दवात को महाकाली का रूप माना जाता हैं। सर्वप्रथम नई स्याहीयुक्त दवात को शुद्ध जल के छींटें देकर पवित्र कर ले, उसके बाद उसके मुख पर मौली बॉंध दें। दवात को चौकी पर थोड़े से पुष्प और अक्षत डालकर स्थापित कर दें। दवात का रोली, पुष्प आदि से महाकाली के मन्त्र **ॐ श्रीमहालक्ष्मै नमः।** का उच्चारण करते हुए पूजन करें। पूजन के पश्चयात इस प्रकार प्रार्थना करे ।

कालिके त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तसे।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये॥

लेखनी पूजनः

दीपावली के दिन नयी लेखनी या पेन को शुद्ध जल से धोकर तथा उस पर मौली बॉंधकर लक्ष्मीपूजन की चौकी पर कुछ अक्षत एवं पुष्प डालकर स्थापित कर दें। तदुपरान्त रोली, पुष्प आदि से **ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः।** का उच्चारण करते हुए पूजन करें। मन्त्र बोलते हुए पूजन करें । पूजन के पश्चयात निम्नलिखित मन्त्र से हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव॥

बहीखाता पूजनः

दीपावली के दिन व्यवसाय से जुडे लोग नए बहीखातों का शुभारम्भ करते हैं। पूजन हेतु नए बहीखाते लेकर उन्हें शुद्ध जल के छींटे देकर पवित्र कर लें। बहीखातों को लाल वस्त्र बिछाकर तथा उस पर अक्षत एवं पुष्प डालकर स्थापित करें। बहीखाते के प्रथम पृष्ठ पर सर्वप्रथम उपर लाल कलम या पेन से **श्री गणेशाय नमः।** लिखे पश्चयात स्वस्तिक का चिह्न चंदन अथवा रोली से बनाएँ। पश्चयात अपने इष्ट देवी-देवता का नाम लिख सकते हैं। यदि बही खातो पर **सप्त श्री** लिखा जाए तो भी आने वाले वर्ष भर के लिये आर्थिक द्रष्टि से लाभदायक रहता हैं। (सप्त श्री लिखने की विधि गुरुत्व ज्योतिष मासिक पत्रिका में पृष्ठ संख्या पर दी गई हैं।

पश्चयात बहीखाते का रोली, पुष्प आदि से विधिवत पूजन करना चाहिए। पूजन के समय **ॐ श्रीसरस्वत्यै नमः** मन्त्र का उच्चारण करें।

तुला का पूजनः

सर्वप्रथम तराजू को शुद्ध कर लेना चाहिए। तदुपरान्त उस पर रोली से स्वस्तिक का चिह्न बनाएँ। उस पर मौली बॉंध दें तथा **ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः।** उच्चारण करते हुए रोली, पुष्प आदि से तराजू का पूजन करें।

लक्ष्मी प्राप्ति का अमोघ साधन दक्षिणावर्त शंख

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सुख-समृद्धि, धन-संपत्ति, रिद्धि-सिद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए हमारे धर्म शास्त्रों मे दक्षिणावर्त शंख का अत्याधिक महत्व बताया गया हैं। दक्षिणावर्त शंख का मुख दायीं और से खुला होता हैं।

शास्त्रोक्त मान्यता हैं की जिस घर में विधि-विधान से दक्षिणावर्त शंख का पूजन होता हैं, उस घर में धन, सुख, समृद्धि, यश-किर्ति की वृद्धि होती हैं। उस घर में लक्ष्मी स्थित होती हैं।

असली नकली पहचान के लिए शंख को पांच दिन और पांच रात तक ठंडे पानी में रखे, यदि नकली शंख होगा तो टूट जायेगा। इस प्रकार असली नकली की परख करके शंख का पूजन में प्रयोग करें।

दहीं या देशी घी के समान रंग वाला शंख उत्तम होता हैं, धूमिल या धुएं जैसे रंग वाले शंख को शंखिणी (अर्थात स्त्री जाती का शंख) कहां जाता हैं।

❖ 2.5 तोला अर्थात त्रीस ग्राम से अधिक वजन का शंख पूजन हेतु उत्तम समझे और 2 तोला या उस्से कम वजन के शंख को साधारण समझे।

❖ शास्त्रों में शंख को विष्णु स्वरुप माना गया हैं, शंख में भगवान विष्णु का वास होता हैं। इस लिए जहां दक्षिणावर्त शंख होता हैं वहां भगवान विष्णु का वास होता हैं जहां भगवान विष्णु का वास होता हैं वहाँ माँ लक्ष्मी निवास करती हैं। जिससे जहाँ माँ लक्ष्मी निवास करती वहाँ रोग, दोष, दुःख, दरिद्रता आदि घरमें रह नहीं सकतें।

❖ शंख को लक्ष्मि प्राप्ति का उत्तम साधन माना गया हैं।

❖ जिसके घर में दक्षिणावर्त शंख होता हैं उसके आयुष्य, कीर्ति तथा धन की वृद्धि होती हैं। जो शंख के जल को मस्तक पर छिड़कता हैं उसके घरमें लक्ष्मी स्थिर होती हैं।

❖ जिस स्थान पर शंखनाद होता हैं वहां लक्ष्मी का स्थिर निवास होता हैं।

❖ विद्वानों का मत हैं की जिस घर में दक्षिणावर्त शंख का पूजन होता हैं उस घर में सर्वदा मांगलिक कार्य संपन्न होते हैं, उस घर में मांगलिक कार्यों के दौरान किसी प्रकार का विघ्न-बाधाएं, विलंब या अशुभ नहीं होता हैं।

❖ शंख के पीछे के हिस्से को सोने से जड़वाना उत्तम होता हैं।

❖ दक्षिणावर्त शंख को पूजा स्थान में स्थापित कर के प्रतिदिन स्नानादि के पश्चयात स्वच्छ वस्त्र धारण कर प्रतिदिन पूजन करें।

❖ पूर्व दिशा में बहनेवाली नदी में स्नान कर नदी के जल को दक्षिणावर्त शंख में भर कर अपने मस्तक पर उस जल की धार गिराने से सभी प्रकार के पापों का नाश होता हैं।

❖ जिस स्त्री को संतान नहीं हो रही हो, संतान जीवित न रहती हो, मृत संतान का जन्म हो रहा हो ऐसी स्त्री को दक्षिणावर्त शंख का पूजन करके जिस गाय के बछ़डे जीवित हो ऐसी गाय का दूध शंख में भर लें। 108 बार मंत्र बोल कर शंख का दूध को प्रसाद के रुप में सेवन करें। यह प्रयोग दूध के बदले घी (थोड़ा गरम करले) का इस्तेमाल कर सकते हैं, इस प्रयोग से स्त्रीको संतान होने की संभावनाएं बढ़ सकती हैं।

❖ जो लोग नदी या तीर्थ तक नहीं जा सकते ऐसे लोग दक्षिणावर्त शंख में नदी या तीर्थ का जल के छींटे अपने मस्तक पर छिडकने, तथा अपने पितृओं का नाम लेकर शंख से तर्पण करने से उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा पितृओं का उद्धार होता हैं, उनको सद्गति प्राप्त होती हैं।

- विद्वानों का कथन हैं की दक्षिणावर्त शंख में जल भर कर उससे भगवान विष्णु का पूजन करने से उसके सात जन्म के पापों का नाश होता हैं।
- जो दक्षिणावर्त शंख के जल से स्नान करता हैं उसे सभी तीर्थों के स्नान का फल मिलता हैं।
- जिस स्थान पर दक्षिणावर्त शंख होता हैं वहां भूत-प्रेत आदि सभी प्रकार के उपद्रवों से रक्षा होती हैं।
- शास्त्रों में शंख को सूर्य चंद्रमां के समान दिव्य गुणों से युक्त बताया गया हैं।
- धार्मिक मान्यता हैं की तीनों लोक में जितने तीर्थ हैं वह सब भगवान विष्णु की आज्ञा से शंख में निवास करते हैं। शंख के दर्शन से पापों का नाश होता हैं।

शंख ध्वनि एवं शंख जल के विशेष लाभ:

आज तोप के गोले या बम के शोर का जो असर होता हैं वहीं असर प्राचीन काल में शंख ध्वनि से होता था। शंख ध्वनि से शत्रुओं की सेना का मनोबल टूट जाता हैं।

यदि जंगल में जहां शंख ध्वनि होती हैं वहां से शेर-बाघ जैसे हिंसक पशु आने की हिम्मत नहीं करते। जहरी जीवजंतु भी वहां से दूर रहते हैं।

कुछ जानकारों का मानना हैं की रोग कारक शूक्ष्म जीवाणु या विषाणु हवा में होते हैं जिसे वायरस कहते हैं, जहां प्रतिदिन प्रातः एवं संध्या शंख ध्वनि होती हैं, वहां जीवाणु या विषाणु अर्थात वायरस का उपद्रव फैलता नहीं हैं।

- दक्षिणावर्ती शंख को धन के भंडार में रखने से धन की वृद्धि, अन्न-भंडार में रखने से अन्न की वृद्धि, वस्त्र के भंडार में रखने से वस्त्र की वृद्धि, अध्ययन व पूजन कक्ष में रखने से ज्ञान की वृद्धि, शयन कक्ष में रखने से सुख-शांति की वृद्धि होती हैं।
- दक्षिणावर्ती शंख में शुद्ध जल भरकर व्यक्ति, वस्तु, भूमि-भवन आदि पर छिड़कने से दुर्भाग्य, अभिशाप, अभिचार, ग्रहों की अशुभता इत्यादि समाप्त हो जाती हैं।
- विद्वानों कथन हैं की ब्रह्म हत्या, गो हत्या जैसे महापातकों से मुक्ति पाने के लिए दक्षिणावर्ती शंख के जल को संबंधित व्यक्ति पर छिड़कने से उसे पापों से मुक्ति मिलती हैं।
- दक्षिणावर्ती शंख का जल जादू-टोना, नज़र, कामण-टूमण जैसे अभिचार वाले कर्मों के दुष्प्रभावों को नष्ट करने में समर्थ हैं।

दक्षिणावर्त शंख के प्रकार:

शास्त्रों में दक्षिणावर्त शंख के दों भेद बताये हैं:
दक्षिणावर्त पुरुष शंख और दक्षिणावर्त स्त्री शंख।

छोटे आकारों वाले कम वजन के दक्षिणावर्त शंख को स्त्री दक्षिणावर्त शंख कहां जाता हैं, धुंधले रंग वाले शंखों को भी स्त्री दक्षिणावर्त शंख माना जाता हैं।

वर्ण के अनुसार दक्षिणावर्त शंख चार प्रकार के बताये गये हैं।

1- ब्राह्मण दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख हरे या सफेद रंग का हो, छूने पर उसकी सतह कोमल महसूस हो, शंख वजन में हल्का हो उस शंख को ब्राह्मण दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

2- क्षत्रिय दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख हल्का रक्त वर्ण हो, शंख के अंश को अलग करने वाली कुछ रेखाएं बनी हो, शंख की ध्वनि कर्कश हो उस शंख को क्षत्रिय दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

3- वैश्य दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख मोटा हो, शंख के हर अंश पर रेखा हो तथा वह पीले रंग की हो उस शंख को वैश्य दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

4- शुद्र दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख कठोर हो, शंख का आकार टेड़ा मेड़ा हो, वजन में भारी हो, शंख की ध्वनि कर्कश, रंग थोडा काला हो उस शंख को शुद्र दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

दक्षिणावर्त शंख के मुख्य तीन गुण माने गये हैं।

1- आकार में गोलाकार हो, 2- शंख की सतह मुलायम हो तथा 3- निर्मल हो

यदि ऐसा शंख किसी कारण से टूट जाये तो टूटे हुवे भाग को सोने की वरख या सोने के पत्तर से उसे ढंक देना चाहिए।

दक्षिणावर्ति शंख की पूजन विधि:

प्रातः स्नान आदि से निवृत्त हो कर, स्वच्छ कपड़े पहन कर, प्रथम दूध से फिर शुद्ध जल से शंख को स्नान कराये। फिस स्वच्छ लाल वस्त्र से उसे पोछे। फिर शंख को सोने या चांदी के पत्र से मढ़ना चाहिए (अर्थात शंख की उपरी सतह को सोने या चांदी के पत्र का आवरण लगाकर ढ़क देना चाहिए), यदि सोने चांदी का पत्र लगाना संभव न हो तो सोने या चांदी की वरक (वरख, वर्क, वर्ख, पर्ण, पन्नी Foil आदि नामों से जाना जाता हैं) भी चढ़ा सकते हैं। फिर शंख का अष्ट द्रव्यों से षोडशोपचार पूजन करें।

शंख का पूजन

संकल्प

हाथ में आचमनी में लज लेकर नीचे देये मंत्र से संकल्प करें (जहां अमुक के स्थान पर संबंधित वर्ष, मास आदि का उच्चारण करें।)

ॐ अत्राद्य अमुक वर्षे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुख वारसे शुभ नक्षत्र करण योग लग्ने मम सिद्धयर्थे हिरण्य गोदासा वाहना हि समृद्धि प्राप्त्यर्थे श्री दक्षिणावर्ती शंखस्य पूजनम् अहं करिष्ये।

अर्थात: आजके अमुक वर्ष, अमुक मास, अमुक पक्ष, अमुक तिथि, अमुक वार को मेरे कार्य की सिद्धि के लिए सुवर्ण, गाय, दास, वाहन आदि समृद्धि की प्राप्ति के लिए मैं श्री दक्षिणावर्ती शंख जा पूजन कर रहा हूं।

(उक्त मंत्र उचारण कर शंखका जल पात्रे में छोड़ दे)

पूजन मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाप्ययोनिधि जाताय श्रीदक्षिणावर्त शंखय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

उक्त मत्र का उच्चारण करते हुवे शंख को अष्ट द्रव्य व सुगंधित इत्र चढ़ाएं। चांदी के बरतन में दूध में चीनी, केसर, बादाम, इलायची मिला कर नैवेद्य तैयार करें। संभव हो तो साथ में फल भी रखें।

कपूर से आरती करें।

ध्यान मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाप्य पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तिमार्थ संपादकाय श्री श्रीदक्षिणावर्त शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यान्गोपान्गसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव निधिरूपाय चतुर्दश रत्न परिवृत्ताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता कृष्णदेव करतल ललिताय श्री शंखमहानिधये नमः।

ध्यान मंत्र आवाहन अर्थात् स्तुति मंत्र है। इसके अतिरिक्त बीज मंत्र अथवा पांच जन्य गायत्री शंख मंत्र का ग्यारह माला जप करना भी आवश्यक है।

जप मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण शंखनिधये समुद्र प्रभवाय नमः।

बीज मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय नमः।

शंख का शाबर मंत्र:

ॐ दक्षिणावर्ते शंखाय मम् गृह धनवर्षा कुरु कुरु नमः॥

शंख गायत्री मंत्र:

ॐ पान्चजन्याय विद्महे। पावमानाय धीमहि। तन्न शंखः प्रचोदयात्।

प्रतिदिन उक्त किसी एक मंत्र का शंख के सम्मुख बैठकर 1, 3, 5, 7, 11 मालाएं जप करना चाहिए। जप की समाप्ति पर जल को आकाश की ओर छिड़के।

ऋद्धि-सिद्धि तथा सुख-समृद्धि की प्राप्ति के लिए हेतु यह प्रयोग अत्यंत लाभ प्रद हैं।

दोष रहित दक्षिणावर्ती शंख का उपरोक्त विधि से पूजन करना अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

शंख का पूजन दिन के प्रथम प्रहर में करने से राज्य पक्ष से सम्मान की प्राप्ति होती हैं।

शंख का पूजन दिन के द्वितीय प्रहर में करने से धन, संपत्ति व लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं एवं बुद्धि का विकास होता हैं।

शंख का पूजन दिन के तृतीय प्रहर में करने से समाज में यश, कीर्ति एवं बुद्धि की वृद्धि होती हैं।

शंख का पूजन दिन के चतुर्थ प्रहर में करने से संतान की प्राप्ति एवं वृद्धि होती हैं।

विशेष: दिन और रात्री के चार-चार प्रहर होते हैं, कुल आठ प्रहर का एक दिन होता हैं। अर्थात एक प्रहर तीन घंटे का होता है। सूर्योदय के समय से प्रथन प्रहर की गणना करनी चाहिए। सूर्योदय समय में 3 घंटे का समय जोड़ने पर दूसरा प्रहर प्रारंभ होगा ऐसे तीन-तीन घंटे जोडकर क्रमशः तीसरा और चौथा प्रहर जान सकते हैं।

***

यम द्वितीया का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में विभिन्न व्रत-पर्व मनाये जाते हैं, कार्तिक महीने की शुक्ल द्वितीया यम-द्वितीया कहलाती है। जिसे भैया-दूज के नाम से भी मनाया जता है।

इस पर्व का मुखय उद्देश्य भाई-बहन के पवित्र रिश्तों में प्रेम भाव की वृद्धि करने वाले दों प्रमुख त्यौहार मनाये जाते है, एक श्रावण मास की पूर्णिमा को रक्षा बन्धन मनाया जाता है, जिसमें भाई बहन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है। दूसरा भाई दूज का त्योहार होता है। जिसमें बहन अपने भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती है। भाई दूज का त्योहार कार्तिक मास की द्वितीया को मनाया जाता है। इस दिन बहनें बेरी पूजन भी करती हैं और भाईयों के स्वस्थ तथा दीर्घायु होने की मंगल कामना करके उन्हें तिलक लगाती हैं।

इस दिन बहन भाइयों को तेल लगाती और फिर भाई पवित्र निदीयों में स्नान करते हैं जो नहीं कर सकते उन्हें बहन के घर स्नान करना चाहिए। इस दिन भाई को भोजन करवा कराने का विशेष महत्व है, फिर बहन चाहे सगी हो या धर्म की मानी हुई कोई भी हो सकती है।

एसी पौराणिक मान्यता हैं के इस दिन बहन अपने हाथ से यदि भाई को खाना खिलाएं, तो भाई की उम्र लम्बीं होती है और भाई के जीवन से कष्ट दूर हो जाते हैं। इस दिन बहनों को अपने भाईयों को चावल अवश्य खिलाना चाहिए।

यदि कोई बहन न हो तो गाय, नदी इयादि स्त्री शक्ति का स्मरण करके अथवा उसके निकट बैठकर भोजन कर करना भी शुभ माना गया है। इस दिन यमराज के पूजन, यमुना-स्नान का भी विशेष महत्व हैं। इस के लिए इसे दोपहर के बाद का समय लेना चाहिये।

बहन के घर भाई का भोजन और शास्त्रीय मत के अनुसार मृत्युदेवता यमराज की पूजा होती है। आज के दिन व्रती बहनों को प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर अक्षत आदि से निर्मित अष्टदल कमल पर गणेश इत्यादि देवताओं का स्थापन करके यम, यमुना, चित्रगुप्त व यमदू का पूजन में इस मंत्र से यमराज की प्रार्थना करना लाभदाय होती हैं।

धर्मराज नमस्तुभ्यं नमस्ते यमुनाग्रज।
पाहि मां किंकरैः सार्धं सूर्यपुत्र नमोस्तुते॥

इस मंत्र से, यमुना की पूजा

यमस्वसर्नमस्तेस्तु यमुने लोकपूजिते।
वरदा भव में नित्यं सूर्यपुत्रि नमोस्तुते॥

इस मंत्र से चित्रगुप्त की पूजा और प्रार्थना--

मसिभाजनसंयुक्तं ध्यायेत्तं च महाबलम्।
लेखनीपट्टिकाहस्तं चित्रगुप्तं नमाम्यहम्।।

इसके बाद शंख या तांबे के अर्घ्यपात्र में जल, पुष्प, अक्षत एवं गंधादि लेकर यमराज के इस मंत्र से अर्ध्य दे

एह्येहि मार्तण्डज पाशहस्त यमांतकालोकधरामरेश।
भ्रातृद्वितीयकृतदेवपूजां गृहाण चार्घ्यं भगवन्नमोस्तुते।।

तत्पश्चात् बहन भाई को अन्न-वस्त्र-आभूषण आदि देकर उसका शुभाशीष प्राप्त करें। इस व्रत से भाई की आयु वृद्धि और बहन को सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती है। मान्यता हैं की बहन के शुभ आर्शीवाद युक्त हाथो से भोजन करना आयुवर्धक एवं आरोग्यकारक होता है।

पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन यमराज अपनी बहन यमुना से मिलने जाते हैं, इस लिए इस दिन जो लोग भी अपनी बहनों से मिलते, उनका यथेष्ट सम्मान पूजन आदि करके उनसे आशीर्वाद में तिलक लगवाते हैं उन्हें मृत्यु भय नहीं रहता।

भैया दूज की कथा

सूर्य भगवान की पत्नी संज्ञा से उनकी दो संतानें, पुत्र यमराज तथा कन्या यमुना थी। संज्ञा पति सूर्य की तेजस्वी किरणों का ताप नहीं सह कर उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बनकर रहने लगी। उसी छाया से ताप्ती नदी तथा शनिश्चर

का जन्म हुआ। उसी छाया से अश्विनी कुमार का भी जन्म माना जाता है, जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

दूसरी तरफ छाया का व्यवहार यम तथा यमुना के प्रति कम होने लगा। जिससे खिन्न होकर यम ने अपनी नई नगरी यमपुरी का निर्माण किया, यमपुरी में यम पापियों को दण्ड देने का काम करते भाई को अलग नगरी में देखकर यमुना जी गौ लोक चली गई।

अधिक समय व्यतीत हो, जाने पर एक दिन अचानक यम को अपनी बहन यमुना की याद आई, तो उन्होंने अपने दूतों को भेज कर यमुना की खोज करवाई, लेकिन यमुना नहीं मिली, फिर यम स्वयं गौ लोक गये, जहां विश्राम घाट नामक स्थान पर यम जी की यमुना जी से भेंट हुई।

यमुना भाई यम को देखते ही हर्ष-विभोर होगई भाईका यथोचित स्वागत-सत्कार कर उन्हें सप्रेम भोजन करवाया। इससे प्रसन्न हो यम ने वर मांगने कहा-

यमुना ने कहा, भैया! मैं आपसे यह वरदान मांगनी चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी कभी यमपुरी न जायें।

मांगा हुवा वर कठिन था, क्योकीं इससे यमपुरी का अस्तित्व ही संकट में हो जायेगा, भाई को चिंतित देखकर यमुना बोली भाई-आप चिन्ता न करें, मुझे यह वरदान दें कि जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करके इस मथुरा नगर में स्थित विश्राम घाट पर स्नान करेंगे, वह यम लोक न जायेंगे।

इस वरको यमराज ने स्वीकार कर लिया। ओर कहा जो इस दिन अपनी बहन के घर भोजन कर यमुना के जल में स्नान करने वालों को स्वर्ग प्राप्त होगा। तभी से यह परंपरा चली आरहीं है।

लक्ष्मी कवच

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

निर्धन मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप उस्की निर्धनता है, निर्धन व्यक्ति हर समय कष्ट भोगता है। निर्धन व्यक्ति का जीवन उसके लिए अभिशाप बन जाता है। आजके युग में किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिये सर्वोपरि आवश्यक धन ही होता है। विद्वानों का अनुभव हैं की इस तांत्रोक्त लक्ष्मी कवच के प्रभाव से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

लक्ष्मी में चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वांगे श्री स्वरूपिणी॥

भावार्थः देवी लक्ष्मीजी हमारे अग्रभाग की, कमलाजी हमारी पीठ की रक्षा करें। नारायणी हमारे मस्तष्क की और श्री स्वरूपिणी देवी हमारे संपूर्ण शरीर के अंगों की रक्षा करे।

रामपत्नी तु प्रत्यंगे रामेश्वरी सदाऽवतु। विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा॥ जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा।
हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी॥ कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्ण मनमोहिनी। जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी॥
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी। भयं हरतु भक्तानां भवबन्ध विमुचतु॥

भावार्थः रामपत्नी और रामेश्वरी हमारे सब अंगों-उपांगों की रक्षा करें। वह कौमारी हैं, चक्रधारिणी हैं, जय देने वाली है और पाशाक्षमालिनी है। वह कल्याणी हैं, हरिप्रिया हैं, हरिरामा हैं, जयंकारी हैं, महादेवी हैं, कृष्णपरायणा हैं, श्रीकृष्ण का मन मोहन करने वाली हैं, महाभयंकर, सिद्धि देने वाली हैं, शुभंकरी, सुख तथा मोक्ष को देने वाली है और जिसके चित्रकूट निवासिनी इत्यादिक अनेक नाम हैं, वह अनपायिनी देवीलक्ष्मी हमारे भय दूर करके सदा रक्षा करें।

कवचं तन्महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
त्रिसन्ध्यंमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसंकटात्॥

भावार्थः जो प्राणी भक्ति से युक्त होकर नित्य तीन या केवल एक बार ही इस पवित्र लक्ष्मी कवच का पाठ करता है, वह सभी संकटों से मुक्त हो जाता है।

कवचस्यास्य पठनं धनपुत्रविवर्द्धनम्॥
भीतिर्विनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम्॥

भावार्थः इस कवच का पाठ करने से पुत्र,धन इत्यादि की वृद्धि होती है, भय दूर हो जाता है। इसका माहात्म्य तीनों लोकों में विख्यात है।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु।
धारणाद्गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति॥

भावार्थः भोजपत्र पर रोचन और कुंकुम से इसको लिखकर गले में धारण करने से सभी प्रकार की कामनाएं सिद्ध होती है।

अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थी लभते धनम्।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्यास्य प्रसादतः॥

भावार्थः कवच के प्रभाव से पुत्र, धन,मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गर्भिणी लभते पुत्रं वंध्या च गर्भिणी भवेत्।
धारयेद्यति कण्ठे च अथवा वामबाहुके॥

भावार्थः यदि स्त्रियां गले या बाईं भुजा में इस कवच को नियम से धारण करें तो गर्भवती स्त्री को उत्तम संतान होता है और बांझ स्त्री गर्भवती होती है।

यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवभूदवेत्।
मृत्युव्याधिभ्यं तस्य नासित किन्चिन्महीतले॥

भावार्थः जो प्राणी नियमित व भक्तिसहित इस कवच का पाठ करता है, वह विष्णु समान हो जाता है। संसार में उसे मृत्यु अथवा व्याधि का भय नहीं रहता।

पठेद्वा पाठयेद्वापि श्रृणुयाच्छ्रावयेदपि।
सर्वपाप विमुक्तस्तु लभते परमां गतिम्॥

भावार्थः जो प्राणी इस कवच का पाठ करता या दूसरे को पाठ करने को प्रेरित करता है, स्वयं सुनता या दूसरे को सुनाता है, वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

संकटे विपदे घोरे तथा च गहने वने।

राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।

पठनात द्वारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम्॥

भावार्थः संकट, विपदा, घने जंगल, राजद्वार, नौका मार्ग, रण आदि स्थानों में इस कवच का पाठ करने से या धारण करने से निश्चित ही जय की प्राप्ति होती है।

अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं श्रुणुयाद्यदि।

सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्यं यशस्विनम् ॥

भावार्थः यदि बांझ स्त्री पैंतालीस दिन तक इस कवच को श्रवण करे तो दीर्घायु, महायशवान संतान लाभ प्राप्त कर सकती है, इसमें संदेह नहीं है।

श्रृणुयाद्यः शुद्धबुद्धया द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।

सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद्विमुच्यते ॥

भावार्थः जो विशुद्ध मन से दो महीने तक ब्राह्मण के मुख से इस कवच को सुनता है, उसकी सम्पूर्ण कामना सिद्ध होती है और संसार बंधनों से छूट जाता है।

मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं श्रवणं यदि ।

रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः ॥

भावार्थः जिस स्त्री के पुत्र उत्पन्न होकर जीवित नहीं रहते, वह तीन महीने तक इस कवच को श्रद्धापूर्वक सुने तो उसके पुत्र जीने लगते हैं। रोगी भी पाठ करने से एक मास में ही रोगमुक्त हो जाता है।

लिखित्वा भूर्जपत्रे च अथवा ताड़पत्रके।

स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥

भावार्थः जो प्राणी भोजपत्र अथवा ताड़पत्र पर इस कवच को लिखकर घर में स्थापित करता है, उसे अग्नि या चोर आदि का भय नहीं होता।

श्रृणुयाद्धरयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि।

यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्नाः सर्वे देवताः॥

भावार्थः जो प्राणी प्रतिदिन इस कवच को सुनता है, पाठ करता है, दूसरे को अध्ययन हेतु प्रेरित करता है और जो इसको धारण करता है, उस पर देवगण सदा प्रसन्न रहते हैं।

बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी,

आद्या शक्तिः सदालक्ष्मीभक्तानुग्रहकारिणी ।

धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥

भावार्थः अधिक क्या कहें, जो प्राणी इस कवच का पाठ करता है या इसे धारण करता है, उस पर लक्ष्मीजी की सदैव कृपा बनी रहती है।|

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

रत्नों का अद्भुत रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूंगा

मंगल का रत्न मूंगा मंगल ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं।

मूंगे को मंगल का रत्न माना गया है।

मूंगे को विभिन्न भाषाओ मे निम्न लिखित नामो से जाना जात है।

हिन्दी मे :- मूंगा

सस्कृत मे :- विद्रूम, लालमणि, प्रवाल, रत्नांग, अंगारक मणि, भौम रत्नक, अम्भोदिपल्लव आदि नाम से जाना जाता हैं।

फ़ारसी मे :- मिरजान, मिरंगा, मिरंग, मरजां

अंग्रेजी :- कोरल, रेड कोरल

मूंगा मुख्यत लाल, सिंदूरी, गेरूआ, सफेद, काला आदि मिलते-जुलते रंग में पाया जाता हैं। मूंगा रत्न चमकदार व कोणदार होता हैं। मूंगे का वजन औसत से अधिक होता हैं। मूंगा एक जैविक रत्न होता है।

मूंगे का जन्म:

मूंगा समुद्र से मिलने वाला रत्न हैं। यह जैविक रत्न हैं जो समुद्र में एक विशेष प्रकार के कीड़े होते हैं जो अपने लिए घर बनाते हैं। जो मूंगे का पौधा या बैल के नाम से जाना जाता हैं, जिसे मूंगा चट्टाने भी कहते हैं। मूंगे का पौधा केवल शाखाओं से युक्त होता हैं, जिस में पत्ते नहीं होते।

मूंगे का एक पौधा अंदाजन एक-दो फुट ऊंचा और लगभग एक इंच मोटा होता है। कुछ दुर्लभ मूंगे कभी-कभी इस्से अधिक उचाई और चौडाई में प्राप्त होते हैं।

रासायनिक संरचना से मूंगा कैल्सियम कार्बोनेट का एक घटक होता हैं। मूंगे का पौधा जब परिपक्व हो जाता हैं, तब उसे समुद्र से निकालकर बाजार में कटाई के लिये आता हैं और उसे विभिन्न आकार और साईज़ में काटा जाता है।

समुद्र में कम गहराई पर प्राप्त मूंगे का रंग गहरा होता हैं और समुद्र में मूंगा जितनी गहराई पर प्राप्त होता है, उसका रंग उतना ही फीका होता जाता हैं।

जानकारो के मतानुशार भूमध्यसागर के आस-पास के द्वीपों एवं देश अल्जीरिया, ट्यूनीदिया, कारडीनिया, सिसली, ईरान, हिंद महासागर, स्पेन, इटली तथा जापान में प्राप्त होता है।

इटली से प्राप्त मूंगा गहरे लाल रंग का होता है जिसे इटैलियन मूंगा कहा जाता है। सर्वोत्तम मूंगा जापान का होता है जिसे जापानी मूंगे के कहां जाता हैं।

मूंगा से लाभ:

- एक उत्तम मूंगे में विलक्षण शक्तियां समाहित होती हैं। इस कारण यह धारणकर्ता की धैर्य शक्ति में वृद्धि करता हैं।
- मूंगा शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए विशेष लाभदायक होता हैं।
- स्वप्न भय, बूरी नज़र रे रक्षा, भूत-प्रेत आदि का भय नहीं होता हैं।
- जिन बच्चों को बार-बार नज़र लगती हों उनके गलें में छोटा 2-3 रत्ती का मूंगा गले में पहनाना चाहिए।
- मूंगा धारण करने से रक्त की शुद्धि और रक्त की वृद्धि होती हैं।
- हृदय रोगों में मूंगा लाभदायक होता हैं।
- मूंगे की माला को जाप करने के लिये भी प्रयोग किया जाता है.
- मूंगा धारण करने से साहस और वीरता का संचार होता हैं।
- मूंगे का सीधा प्रभाव मनुष्य के मांस एवं रक्त पर पड़ता हैं।

- यह शरीर के रक्त से विशेष प्रकार के विटामिन बनाता हैं।
- विद्वानो के अनुसार सुहागिन स्त्रियों के मूंगा धारण करने से अखंड सौभाग्य प्राप्त होता हैं।
- लोक मान्यताओं के अनुसार मूंगा धारणकर्ता पर यदि कोई रोग का संकट आने वाला हो तो मूंगे का रंग बदलजाता हैं, एवं रोग शांत होने पर मूंगा पुनः वास्तविक रंग का हो जाता हैं।
- बौद्ध धर्म के विद्वानो के मत से यदि कोई मानसिक रोग से पीडित हो तो मूंगा धारण करने से यह रोग
- को दूर करने वाला हैं। मूंगा व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करने वाला हैं। मूंगा रक्त स्राव को रोकने में विशेष लाभकारी होता हैं।

रोग और मूंगा:

- मूंगा बहुमूल्य औषधी के रुप में भी प्रयोग किया जाता हैं।
- मूंगे की भस्म का सेवन शारीरिक बल में वृद्धि करता हैं।
- उदर संबन्धी रोगों में भी इसका सेवन लाभदायक होता हैं।
- मूंगे को रात में जल में डूबा कर रखकर सुबह इस जल को आंखों में लगाने से नेत्र ज्योति तेज होती हैं।
- पीलिया, मिरगी व हृदय रोग में भी मूंगे की भस्म का सेवन लाभकारी रहता हैं।
- बवासीर में मूंगा अत्यंत लाभदायक होता हैं। जानकारो के मतानुशार यदि पुराना बवासीर हो तो लगभग एक मास हर दिन रात्री में मूंगे को पानी में रात भर डूबा कर रखदें उस पानी को सुबह पीने से बवासीर जड़ से समाप्त हो जाता हैं।

मान्यता:

- मूंगा अन्य रत्नों की अपेक्षा चिकना होता है तथा हाथ में लेने पर फिसलता है।
- असली मूंगे को रक्त में रखने से उसके चारों ओर रक्त जम जाता है।
- असली मूंगे पर पानी की बूंद रखने से बूंद मूंगे पर बनी रहती है, फैलती नहीं हैं।
- असली मूंगे पर हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालने से उसकी सतह पर झाग उठने लगते हैं।
- काले मूंगे पर हाइड्रोक्लोरिक एसिड का कोई प्रभाव नहीं होता।
- असली मूंगा आग में डालने से जल जाता है। और उसमें से बाल जलने के समान गंध आती है।

मूंगे के दोष

- यदि मूंगे में गड्ढा हो तो वह जीवन साथी के लिये प्राण घातक होता हैं।
- यदि मूंगे में काले छींडे या धब्बे हो तो धारण कर्ता का स्वास्थ्य क्षीण होता हैं।
- यदि मूंगे में सफेद छींडे या धब्बे हो तो धन का नाश करने वाला होता हैं।
- राख के समान रंग का मूंगा धारण करने से आकस्मिक धन हानी, चोरी-लूट आदि में धन नाश होता हैं।
- जिस मूंगे का एक कोना कटा हो एसा मूंगा संतान के लिए हानिकारक होता हैं।
- फटा हुवा मूंगा धारण करने से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं होने लगती हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

एक मुखी:

एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रहम स्वरुप हैं।

- एक मुखी रुद्राक्ष काजू के समान अर्थात अर्धचंद्राकार स्वरुप में प्राप्त होते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष गोल आकार में सरलता से प्राप्त नहीं होता हैं। क्योकि गोलाकार में मिलना दुर्लभ मानागया हैं। बडे सौभाग्य किसी मनुष्य को गोल एक मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं प्राप्त से होता हैं।
- इस लिए एकमुखी रुद्राक्ष भोग व मोक्ष प्रदान करने वाला हैं।
- जो मनुष्य ने एकमुखी रुद्राक्ष धारण किया हो उस पर मां लक्ष्मी हमेशा कृपा वर्षाती हैं। या जिस घर में एकमुखी रुद्राक्ष का पूजन होता हों वहां लक्ष्मी का स्थाई वास होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य के घर में धन-धान्य, सुख-समृद्धि-वैभव, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य की सभी प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- जिस स्थान पर एकमुखी रुद्राक्ष होता हैं वहां से समस्त प्रकार के उपद्रवो का नाश होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से अंतःकरण में दिव्य-ज्ञान का संचार होता हैं।
- भगवान शिव का वचन हैं की एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से ब्रहमहत्या व पापों का नाश करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष सर्व प्रकार कि अभीष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से धारण कर्ता में सात्त्विक उर्जा में वृद्धि करने में सहायक, मोक्ष प्रदान करने समर्थ हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने वाला होता हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ एं हं औं ऐं ॐ॥

दोमुखी रुद्राक्ष:

- दो मुखी रुद्राक्ष बादाम के समान आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष साक्षात अर्द्धनारीश्वर का स्वरुप हैं। कुछ ग्रंथो में दो मुख वाले रुद्राक्ष को देव देवेश्वर कहा गया हैं।
- शिव-शक्ति की निरंतर कृपा प्राप्ति हेतु दोमुखी रुद्राक्ष विशेष लाभकारी होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक शांति प्राप्त होकर तामसिक प्रवृत्तियों का नाश होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण कर्ता को आध्यात्मिक उन्नति के लिए सहायता प्रदान करता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से उदर संबंधित समस्याओं से मुक्ति मिलती हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष आकस्मिक दुर्घटनाओं से रक्षा करने में सहायक सिद्ध होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गौ हत्या के पापों का नाश करता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष से अनेक प्रकार की व्याधियां स्वतः ही शांत हो जाती हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष मनुष्य की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला एवं शुभ फल प्रदान करने वाला हैं।
- यदि दो मुखी रुद्राक्ष को गर्भवती स्त्री अपनी कमर पर या भुजा पर धारण करती हैं तो गर्भावस्था के नौ महिने तक उसकी अनजाने भय, तोने-तोटके, बेहोशी, हिस्टीरिया, बूरे स्वप्न आदि से रक्षा होती हैं। साथा ही एक रुद्राक्ष को गर्भवती स्त्री के बिस्तर पर तकिए के नीचे एक डिब्बि में रखने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

दो मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ॥

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

- स्वप्न में स्वयं का कद छोटा देखना प्रियजन से अपमान एवं विभिन्न परेशानी मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं का कद बड़ा देखना निकटतम भविष्य में भारी संकट आने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को कसम खाते देखना संतान पक्ष पर संकट आने का संकेत है।
- स्वप्न में कलम देखना विद्या प्राप्ति एवं धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में कर्ज देते देखना जीवन में खुशहाली आने का संकेत है।
- स्वप्न में कर्ज लेते देखना व्यवसायीक कार्य में हानि का संकेत है।
- स्वप्न में किसी कला कृतियों को देखना समाज में मान-समान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में कपूर देखना व्यापार में लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में कबाड़ या कबाडी को देखना जल्द ही अच्छे दिनों की शुरूआत होने का संकेत है।
- स्वप्न में कबूतर को देखना प्रेमि-प्रेमिका से प्यार बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में कबूतरों का झुंड देखना किसी शुभ समाचार के मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कमल का फूल देखना ज्ञान प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में कपास देखना घर की सुख-समृद्धि बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में कंगन देखना किसी से अपमानित होने का संकेत है।
- स्वप्न में कदू देखना पेट में दर्द होने का संकेत है।
- स्वप्न में किसी कन्या देखना धन वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में कफन देखना दिर्घायु होने का संकेत है।
- स्वप्न में कछुआ देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कलश देखना किसी कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कंबल देखना स्वास्थ्य समस्या होने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को कपडे धोते देखना किसी कार्य में रूकावट के बाद में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में किसी का कटा सिर देखना किसी के समक्ष शर्मिंदा होने का संकेत है।
- स्वप्न में कब्र खोदते देखना धन लाभ एवं भूमि-भवन से संबंधित लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं का कत्ल देखना शुभ संकेत हैम लेकिन अनुचित कर्म से दूर रहें।
- स्वप्न में कब्रिस्तान देखना किसी कार्य में निराशा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कंघी देखना शरीर पर चोट लगने एवं दान्त या कान में दर्द होने का संकेत है।
- स्वप्न में कसरत होते देखना किसी रोग से पीड़ित होने का संकेत है।
- स्वप्न में काली आँखे देखना व्यापार में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में काला रंग देखना शुभ फलों की प्राप्ति का संकेत है।

- स्वप्न में स्व्यंको काजू खाते देखना नये व्यापार या नौकरी मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कान देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कान साफ करते देखना ज्ञान वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में कारखाना देखना किसी दुर्घटना में फसने की सूचना मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में काली बिल्ली देखना कोई बड़ा लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयंको कुंडल पहने देखना संकट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कुबडा देखना किसी कार्य में विघ्न होने का संकेत है।
- स्वप्न में कुमकुम देखना किसी कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कुल्हाडी देखना किसी कार्य में अधिक परिश्रम के उपरांत अल्प लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कुत्ते को भोंकते देखना समाज में हास्य के पात्र बनने का संकेत है।
- स्वप्न में कुत्ते को झपटते देखना दुश्मन को हराने संकेत है।
- स्वप्न में कुर्सी को खाली देखना नई नौकरी मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कूड़े का ढेर देखना थोड़ी कठिनाई के बाद धन मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में किला देखना निकटतम भविष्य में ख़ुशी प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में कील देखना परिवार में बटवारा होने का संकेत है।
- स्वप्न में केश संवारते देखना तीर्थ यात्रा पर जाने का संकेत है।
- स्वप्न में केला देखना जल्द ही ख़ुशी मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में केक देखना उपयुक्त वस्तु मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कैमरा देखना अपने भेद छिपा कर रखने का संकेत है।
- स्वप्न में कोढ़ देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कोहरा देखना किसी संकट के समाप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में कोठी देखना दुःख मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कोयल को देखना या सुनना जल्द ही शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में किसी ऊंचे स्थान से कूदते देखना किसी कार्य में असफलता प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में नर कंकाल देखना दिर्धायु प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में कद लम्बा होते देखना मृत्युतुल्य कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में कद घटते देखना समाज में अपमानित होने का संकेत है।
- स्वप्न में कटोरा देखना बनते कार्य में विघ्न आने का संकेत है।
- स्वप्न में कमंडल देखना परिवार के किसी सदस्य से वियोग होने का संकेत है।
- स्वप्न में करवा चौथ का दृष्य यदि औरत देखे तो वह आजीवन सौभाग्य वती रहती हैं, यदि पुरुष देखे तो धन-धान्य की वृद्धि होती हैं।
- स्वप्न में कागज कोरा दिखे तो शुभ संकेत है।
- स्वप्न में कागज लिखा हुवा दिखे तो अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में कुरता सफेद रंग का देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में कुरता अन्य रंग का देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को कुर्सी पर बैठा देखना किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति एवं पदोन्नती होने का संकेत है।
- स्वप्न में कुर्सी पर किसी अन्य को बैठा देखना अपमानित होने का संकेत है।
- स्वप्न में कब्र खोदते देखना शीघ्र भवन निर्माण होने का संकेत है।

- स्वप्न में कपड़े का व्यपार होते देखना व्यापार में लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में कपडे चमक तेदेखना शीघ्र विवाह और मान-सम्मान में वृद्धि का संकेत हैं।
- स्वप्न में कपडे सफेद रंग के देखना देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कपडे हरे रंग के धन दौलत बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में कपडे पीले रंग के देखना स्वस्थ्य में खराबी एवं चोरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में कपडे मैले देखना धन हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में कपडे पर खून धब्बे देखना व्यर्थ ही बदनामी मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कछुआ देखना भारी मात्रा में धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कमल ककड़ी देखना उत्तम भोजन मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को करी खाते देखना विधवा या विधुर से संपर्क बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में कान कटते देखना स्वजनों से वियोग का संकेत है।
- स्वप्न में काला कुत्ता देखना किसी कार्य मे सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में काना व्यक्ति दिखे तो प्रतिकूल समय का संकेत है।
- स्वप्न में कीड़ा देखना शक्ति एवं बल की वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में कुम्हार को देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में केतली के फूल देखना दांपत्य सुख में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में कैंची देखना अकारण किसी से वाद-विवाद होने का संकेत है।
- स्वप्न में कोयला देखना प्रेम जाल में फँस ने से दु:ख मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में कुरान देखना घर में सुख-शांति बढ़ने का संकेत है।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूलांक 3 स्वामी गुरू

मूलांक 3

स्वामी ग्रह:- गुरू

मित्र अंक- 1, 2, 9

शत्रु अंक- 6

सम- 8

स्व अंक:- 3

तत्व:- आकाश

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 3, 12, 21 व 30 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 3 होता है।

मूलांक 3 अंक के व्यक्ति अधिक उत्साही, महत्वाकांक्षी और अनुशासन विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति की प्रकृति कार्य क्षेत्र में अधिक रुचिपूर्ण होती हैं।

मूलांक 3 का स्वामी ग्रह गुरु (बृहस्पति) हैं, इस लिए मूलांक 3 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर गुरु का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 3 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण गुरु ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। गुरु ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति के भितर साहस, शक्ति एवं दृढ़ता का विशेष रुपसे देखने को मिलती हैं। मूलांक 3 में जन्म लेने वाले व्यक्ति श्रम का प्रतिक तथा संघर्ष का जीवंत उदाहरण होते हैं। क्योकि मूलांक 3 वाले व्यकियों का जीवन संघर्षमय होता है इसलिए व्यक्ति को जीवन में पग-पग पर संघर्ष करना पड़ता हैं।

मूलांक 3 वाले व्यक्ति अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करने में निपुर्ण होते हैं।

व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उत्तम नहीं होती और व्यक्ति को पैसा संग्रह करने में कठिनाई होती हैं। व्यक्ति अथक परिश्रम कर पैसा कमाने मे दिन-रात एक कर लगे रहते हैं। पर अधिकतर व्यक्ति जितना भी कमाते हैं, उसके अनुरुप व्यय हों जाता हैं। इसलिए व्यक्ति को धन संग्रह करने के अवसर कम ही प्राप्त होते हैं। ऐसे व्यक्ति की महत्वकांक्षाएं बडी होती हैं। व्यक्ति अति शीघ्र उन्नति के शिखर पर पहुँचे, यही इनकी महत्वकांक्षा होती हैं।

मूलांक 3 वाले व्यक्ति स्वभाव से ये शान्त, कोमल हृदय, मृदुभाषी एवं सत्यवक्ता होते हैं। व्यक्ति अपने उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु कठिन से कठिन कष्टों को भी सहन करते हैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। मूलांक 3 वाले व्यक्तियों को छोटा पद या छोटा कार्य पसंद नहीं होता।

व्यक्ति को स्वजनों से विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होतीं, फिर भी व्यक्ति अपने स्वभाव के कारण आपसी संबंधों को बखूबि निभाते हैं।

व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सक्रिय रहते हैं। व्यक्ति में अनुशासन व शासन प्रधान गुणों की

अधिकता होने के कारण उसके अधीनस्त कर्मचारी से विरोध रहता हैं। व्यक्ति अपने कार्य के प्रति इतने समर्पित होते हैं की उन्हें अपने कार्य में किसी प्रकार की त्रुटि या लापरवाही बरदास्त नहीं होती इस कार व्यक्ति अनेक लोगों को अपना शत्रु बना लेता हैं। मूलांक 3 वाले व्यक्ति की बुद्धि अत्यंत तीक्ष्ण और कल्पनाशील होती हैं। इस मूलांक वाले व्यक्ति अधिक बोलने वाले होते हैं।

व्यक्ति का सामाजिक का पद-प्रतिष्ठा दूसरों को प्रभावित करने वाली होती हैं व्यक्ति अपने कार्य में इतने कूशल होते हैं की वह अपने कार्य करते-करते दूसरों को प्रेरणा देने वाले स्रोत बन कर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। व्यक्ति एक अच्छा व्यवसायी और विक्रेता बन सकता हैं।

व्यक्ति का व्यवहार दूसरों के प्रति मैत्रिपूर्ण, स्नेहशील और सामाजिक होता हैं। व्यक्ति थोडे किसी विशेष परिस्थितियों में तुनक मिजाज हो सकते हैं जिसके कारण व्यक्ति के विचारों में स्थिरती की कमी हो जाती हैं। मूलांक 3 वाले व्यक्ति धार्मिक विचारों के होने के कारण धर्म-कर्म के कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं और अपना विशेष योगदान देने से पीछे नहीं रहते हैं। व्यक्ति की विद्या-अध्ययन और बैधिक कार्य में विशेष रुचि होती हैं इस लिए व्यक्ति निरंतर इन विषयों पर चिंतन-मनन करते रहते हैं। व्यक्ति की तर्क-वितर्क में विशेष रुचि होती हैं।

मूलांक 3 वाले व्यक्ति मानसिक रूप से ये काफी संतुलित एवं विकसित होते हैं तथा किसी भी विषय को समझने क्षमता विशेष रुप से होती है। गुरु के प्रभाव में व्यक्ति धार्मिक विचारों के होने के कारण मन से दूसरों का अहित नहीं करते हैं।

मूलांक 3 वाले व्यक्ति में सकारात्मक गुणों की प्रचुरता रहती हैं। व्यक्ति हर परेशानी या मुसिबत में अपना धैर्य नहीं खोते। व्यक्ति अपनी परेशानियां किसी को जल्द नहीं बताते उसे छुपाकर रखने का प्रयास करते हैं, इस लिए व्यक्ति विपरित परिस्थितियों में फसे होने के बावजुद मुस्कराते रहते है। मूलांक 3 वाले व्यक्ति शांत स्वभाव के होने के बावजूद भी कभी-कभी जल्दबाजी हो जाते हैं, जिस कारण किसी महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने से पहले उसे बीच में ही छोड़ देते हैं। व्यक्ति थोडे जिद्दी स्वभाव के होते हैं जिस कारण छोटी-छोटी बातों पर भी अड़ जाते हैं। व्यक्ति में अपने मित्र और शत्रु को पहचान ने की क्षमता कम होती हैं, इस लिए उसके गुप्त शत्रु की संख्या अधिक होती हैं। व्यक्ति के जीवन में प्रायः उतार-चढ़ाव होते रहते हैं। व्यक्ति को किसी महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय और जोखम भरें कार्य को संपन्न करते समय अत्याधिक सावधान रहना चाहिए। एसे कार्य में जल्दबादी या लापरवाही बडा़ नुकसान कर सकती हैं।

शुभ दिन:

शुभ वर्ष 21,30,39,48,57,66,75 वां वर्ष हैं, तिथि 3,12,21,30 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में गुरूवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

स्वास्थ्य:

व्यक्ति को प्रायः हड्डियों में दर्द रहता हैं और थकावट सी रहती हैं। अत्यधिक परिश्रमि होते हैं अतः अति परिश्रम कारण वे थके से रहते हैं। स्नायु तंत्र कमजोर हो जाता हैं। मधुमेह, चर्मरोग, दाद, खाज, षूल, मूत्रराग, वीर्यदोष, स्मरण शक्ति की कमी, बोलने में परेषानि संभव, त्वचा रोग हो जाते हैं।

उपयुक्त आहार:

चेरी, स्ट्रोबेरी, सेब, नाशपती, अनार, अनानस, अंगूर, फुदिना, गाजर, पालक एवं करेले, केसर, जायफल, लौंग, बादाम, अंजीर आदि लाभदायक रहते हैं।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यवसाय- व्यक्ति वस्त्र, पान, अध्ययन, उपदेशक, प्राध्यापक, मंत्री, जज, सचिव, कलर्क, चिकित्सा, अभिनेता, सेल्समैन, स्टेनो, जल-जहाज,

षिक्षा, अदालती, राजदूत, वकालत, पुलिस, दर्षन, विज्ञान, बैंक, विज्ञापन, दवाई आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए दिशा ईशान कोण एवं पूर्व-उत्तर दिशा शुभ होती हैं। अनुकूल रंग चमकीला, गुलाबी, हल्का जामुनी हैं।

मूलांक 3 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

कष्ट निवारक उपाय

- आपक मूलांक स्वामी बृहस्पति (गुरु) के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी तर्जनी उंगली में पीला पुखराज धारण कर सकते हैं। आप पुखराज के बदले उसका उपरत्न सुनहला भी धारण कर सकते हैं।
- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित मंगल गणेश, गुरु यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

गुरुवार का व्रत: बृहस्पति ग्रह को प्रसन्न करने हेतु गुरुवार का व्रत किया जाता हैं। गुरुवार का व्रत करने से धन - संपत्ति कि प्राप्ति होती हैं घर में सुख-शांति और समृद्धि बढती हैं। लडकी के विवाह में आरही बाधाएं दूर होती हैं। गुरुवार का व्रत करने से बृहस्पति के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका मूलांक स्वामी गुरु हैं अतः गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 5 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 5 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 3 मुखी और 2 मुखी रुद्राक्ष भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

शांति के लिए दान

ग्रह:- बृहस्पति (गुरु)

वार:- गुरुवार

बृहस्पति ग्रह कि शांति हेतु पुखराज, चने की दाल, हल्दी, पीला कपड़ा, गुड़, केसर, पीला फूल, घी और सोने की वस्तुओं का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- कार्य में सफलता हेतु माथे पर केसर और चंदन का तिलक लगाएं।
- नौकरी में परेशानी आ रही हो तो पीपल में जल चढाएं।
- आर्थिक परेशानी के निवारण हेतु तेल में चेहरा देख कर तेल का दान कर दें।
- भूमि-भवन से संबंधित समस्या हेतु गायको हरी घास खिलाएं।
- भाग्य वृद्धि हेतु हनुमान मंदिर में बेसन के लड्डु का भोग लगाएं।
- नौकरी-व्यवसाय में उन्नति हेतु 7 साबूत हल्दी को पीले कपडे में बांध कर अपने घर में सुरक्षित रखदें।
- स्वास्थ्य संबंधित समस्या के निवारण हेतु स्नान के पानी में लालचंदन घीस कर मिलाकर स्नान करें।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online** | Order Now

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

4 नवम्बर से 10 नवम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
4	रवि	कार्तिक	कृष्ण	द्वादशी	25:15	उत्तरा-फाल्गुनी	21:34	वैधृति	24:49	कौलव	14:07	सिंह	04:26
5	सोम	कार्तिक	कृष्ण	त्रयोदशी	23:40	हस्त	20:36	विषकुंभ	22:16	गर	12:25	कन्या	-
6	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्दशी	22:23	चित्रा	19:54	प्रीति	19:57	विष्टि	10:59	कन्या	08:14
7	बुध	कार्तिक	कृष्ण	अमावस्या	21:31	स्वाती	19:36	आयुष्मान	17:57	चतुस्पाद	09:54	तुला	-
8	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	एकम	21:11	विशाखा	19:47	सौभाग्य	16:20	किस्तुघ्न	09:17	तुला	13:42
9	शुक्र	कार्तिक	शुक्ल	द्वितीया	21:27	अनुराधा	20:34	शोभन	15:11	बालव	09:14	वृश्चिक	-
10	शनि	कार्तिक	शुक्ल	तृतीया	22:23	जेष्ठा	21:59	अतिगंड	14:32	तैतिल	09:50	वृश्चिक	22:00

4 नवम्बर से 10 नवम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
4	रवि	कार्तिक	कृष्ण	द्वादशी	25:15	गोवत्स द्वादशी (गौ-बछडा बारस) व्रत, वसु द्वादशी, गुरु द्वादशी, वाघ बारस (गुज.)
5	सोम	कार्तिक	कृष्ण	त्रयोदशी	23:40	धनत्रयोदशी (धनतेरस), धन्वन्तरि जयन्ती (आयुर्वेद), कामेश्वरी जयन्ती, सोम-प्रदोष व्रत, 3 दिन का गोत्रिरात्र व्रत, यमपंचक दीपदान 5 दिन, श्री पदम् प्रभु जी जन्म (जैन),
6	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्दशी	22:23	रूप चतुर्दशी, नरकहरा चतुर्दशी, मासिक शिवरात्रि व्रत, काली चतुर्दशी, काली चौदस (गुज.) श्रीहनुमान जयन्ती (अयोध्या), छोटी दीपावली, यम-तर्पण, धूमावती जयन्ती (तान्त्रिक पंचांग अनुसार)
7	बुध	कार्तिक	कृष्ण	अमावस्या	21:31	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम कार्तिकी अमावस्या, दीपावली, कमला महाविद्या जयन्ती, श्रीगणेश-लक्ष्मी पूजा, सुखरात्रि-जागरण, मध्यरात्रिकालीन महानिशीथकाल में काली पूजा (प.बं), गौरी-केदार व्रत, कुबेर-पूजन, महावीर स्वामी निर्वाणोत्सव (जैन), जैन नववर्ष, स्वामी रामतीर्थ-जन्मतिथि एवं पुण्यतिथि, स्वामी दयानन्द स्मृतिदिवस,
8	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	एकम	21:11	अन्नकूट महोत्सव, गोवर्धन-पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण सम्वत् 2545 प्रारंभ, बलि पूजा, नववस्त्रधारण, सायं मंगल मालिका एवं गो-क्रीडा, गो-संवर्धन सप्ताह प्रारम्भ
9	शुक्र	कार्तिक	शुक्ल	द्वितीया	21:27	भैया दूज-टीका, यमद्वितीया-स्नान, यमपंचक पूर्ण, चित्रगुप्त-पूजन, दवात पूजा (बिहा.), नवीन चन्द्र-दर्शन, विश्वकर्मा-पूजन
10	शनि	कार्तिक	शुक्ल	तृतीया	22:23	विश्वामित्र जयन्ती,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> **Shop Online | Order Now**

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इस लिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

राशी रत्न एवं उपरत्न

सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

4 नवम्बर से 10 नवम्बर 2018 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
29 Oct	प्रातः 05:43 से प्रातः 06:18 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		**अमृत सिद्धि योग**	
30 Oct	दोपहर 01:08 से दिन प्रातः03:52 तक	29 oct	प्रात: 05:43 से प्रात: 06:18 तक
3 Nov	रात 03:14 से अगले दिन प्रात: 05:46 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
30 Oct	दोपहर 01:08 से रात 12:09 तक (पृथ्वी)	2 Nov	सांय 06:10 से अगले दिन प्रात: 05:10 तक (पृथ्वी)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक

वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र

रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक

वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। **>> Shop Online | Order Now**

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, precious and semi precious Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ……..………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ……..….……………………...	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ……..….………………….	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ……..….………………….	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ……..….…………………….	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ……..….…………………….	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……..….…………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ……..….………………….	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ……..….…………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……..….…………………...	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……..….…………………...	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……..….……………….	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……..…....	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ……..….………………...	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ……..….…………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ……..….………………….	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ……..….………..	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……..….………………...	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……..….…………………...	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……..….….	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……..….………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ……..……………….	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ………….....	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ……..….……………….	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……..….………………………	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ……..….………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ……..….…………………...	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……..…………...	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ……..….…………………...	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……..…………….	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……..………………..	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……..……………...	1050

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..……………….	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach …………………………..	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..……………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………..…....	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………...…………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach …………………………..	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………….	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..………………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………..…....	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..………………...…………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..……………………………	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………..	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..………………………..	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ………………………………	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

4 नवम्बर से 10 नवम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Weekly

4-Nov to 10-Nov 2018